जैन शासक

अमोध वर्ष प्रथम
का
इतिहास

डॉ० दीनबन्धु पाण्डेय

जैन शासक
अमोघवर्ष प्रथम
का
इतिहास

जैन शासक अमोघवर्ष प्रथम का इतिहास

डॉ० दीनबन्धु पाण्डेय
अध्यक्ष
कला इतिहास विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

2000
कला प्रकाशन
बी० 33/33-ए-1, न्यू साकेत कालोनी,
बी०एच०यू०, वाराणसी-221010

प्रकाशक :

कला प्रकाशन
बी. 33/33-ए-1, न्यू साकेत कालोनी,
बी.एच.यू., वाराणसी-221005
फोन नं. : 0542-310682

© लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN - 81 - 87566 - 14 - 0

प्रथम संस्करण : 2000

मूल्य : २०० रूपये

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :

सरिता कम्प्यूटर्स
डी. 56/48ए, औरंगाबाद, वाराणसी
फोन नं. : 0542-359521

मुद्रक :

महावीर प्रेस
भेलूपुर, वाराणसी

विश्रुत इतिहासकार

प्रोफेसर अवधकिशोर नारायण

को

सादर समर्पित

प्राक्कथन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एम.ए. के (प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व) पाठ्यक्रम के इतिहास-लेखन प्रश्नपत्र के एकांश पूर्ति के लिए १९६५-६६ सत्र में मैंने प्रस्तुत विषय का चयन किया था। प्रोफेसर अवधकिशोर नारायण के मार्ग निर्देशन में मैंने अमोघवर्ष प्रथम सम्बन्धी जो कार्य प्रारम्भ किया था, उसका यह संवर्धित रूप इतिहास के प्रेमियों के लिए प्रकाशित है। राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष प्रथम से सम्बन्धित कई एक नवीन धारणाएँ इस अध्ययन में प्रस्तुत हो रही हैं जो इतिहास के अध्येताओं के लिए आकर्षण के केन्द्र होंगे।

इस अवसर पर अमोघवर्ष प्रथम के कोन्नूर अभिलेख के २९वें से ३१वें श्लोक के पुनरीक्षण कार्य में जो सहयोग मुझे प्रोफेसर विश्वम्भरशरण पाठक, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, स्वर्गीय प्रोफेसर लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा डॉ. रामअधार पाठक, पुराण शोध अनुभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं पण्डित श्यामाचरण जी त्रिवेदी, पूर्व प्रधानाचार्य, नन्दलाल बाजोरिया संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी से प्राप्त हुई उसके लिए मैं कृतज्ञता ज्ञापन करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत कार्य की पूर्णता डॉ. सम्पूर्णानन्द वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष प्रोफेसर लक्ष्मीनारायण तिवारी एवं अमरीकी भारती विद्या संस्थान, रामनगर, वाराणसी के पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष स्वर्गीय श्री आर. पी. हिंगोरानी एवं वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री यादव जी की सहायताओं के बिना सम्भव न थी। मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

डॉ. दीनबन्धु पाण्डेय

विजयदशमी, १९९९
सारनाथ, वाराणसी

विध्वस्तैकान्तपक्षस्य स्याद्वादन्यायवादिनः ।
देवस्य नृपतुंगस्य वर्धतां तस्य शासनम् ।।

— महावीरकृत **गणितसारसंग्रह,**
(मंगलाचरण, श्लोक ८)

अदहदमोघवर्षोऽरातीन

— शाकटायनव्याकरण, अमोघवृत्ति
(सूत्र ख्याते दृश्ये, ४.३.२०८ के उदाहरण रूप में)

सर्प्पं पातुमसौ ददौ निजतनुं जीमूतकेतोस्सुतः
श्येनायाथ शिबिः कपोतपरिरक्षार्थं दधीचोऽर्थिने ।
तेप्येकैकमतर्प्पयन्किल महालक्ष्म्यै स्ववामांगुलिं
लोकोपद्रवशान्तये स्म दिशति श्रीवीरनारायणः ।।

— सञ्जान अभिलेख, एपिग्राफिया इण्डिका,
(भाग १८, पृष्ठ २४८, श्लोक ४७)

हत्वाभ्रातरमेव राज्यमहरद्देवीं च दीनस्ततो
लक्षं कोटिमलेखयत्किल कलौ दाता स गुप्तान्वयः ।
येनात्याजि तनुः स्वराज्यमसकृद्बाह्यात्यर्थकः का कथा
ह्रीस्तस्योन्नतिराष्ट्रकूटतिलको दातेति कीर्त्यामपि ।।

— सञ्जान अभिलेख, एपिग्राफिया इण्डिका,
(भाग १८, पृष्ठ २४८, श्लोक ४८)

अनंतभोगस्थितिरत्र पातु वः प्रतापशील प्रभवोदयाचलः ।
सुराष्ट्रकूटोर्ज्जितवंशपूर्व्वजस्स वीरनारायण एव यो विभुः ।।

— कोन्नूर अभिलेख, एपिग्राफिया इण्डिका,
(भाग ६, पृष्ठ ३६, श्लोक २)

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन ... ७

अध्याय : एक ... १३
अमोघवर्ष प्रथम के शासन के पूर्व की पृष्ठभूमि

अध्याय : दो ... १७
गोविन्द तृतीय की मृत्यु

अध्याय : तीन ... २१
अमोघवर्ष प्रथम का सिंहासनारोहण
– अमोघवर्ष की राज्य भारवहन की योग्यता
– राजधानी मान्यखेट
– अमोघवर्ष प्रथम के विभिन्न विरुद

अध्याय : चार ... २७
शासन के प्रारम्भिक दिन

अध्याय : पाँच ... ३१
अशान्ति एवं उपद्रव का आरम्भ

अध्याय : छ ... ३७
अमोघवर्ष प्रथम के समय में चालुक्य–राष्ट्रकूट संघर्ष की परिणति
– गोविन्द तृतीय के बाद चालुक्य शासन का पुनरोद्भव
– राष्ट्रकूटों का स्थिर शासन और चालुक्यों की पराजय
– राष्ट्रकूट अधीनता में चालुक्यों का स्वतन्त्र शासन : राष्ट्रकूट–चालुक्य वैवाहिक सम्बन्ध

अध्याय : सात ... ४५
गङ्ग–राष्ट्रकूट संघर्ष एवं अमोघवर्ष प्रथम
का दक्षिणी अभियान

अध्याय : आठ ... ४६
अमोघवर्ष प्रथम के काल का अन्तिम उपद्रव तथा
गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों के विद्रोह का प्रश्न

अध्याय : नौ ... ५६
अमोघवर्ष प्रथम के शीलाहार सामन्त

अध्याय : दस ... ६३
अमोघवर्ष प्रथम के समय का पाल–राष्ट्रकूट संघर्ष

अध्याय : ग्यारह ... ६७
अमोघवर्ष प्रथम का राज्य विस्तार

अध्याय : बारह ... ७१
अमोघवर्ष प्रथम का शासन से सन्यास का प्रश्न

अध्याय : तेरह ... ७५
अमोघवर्ष प्रथम के शासन–काल का ज्ञात अन्तिम वर्ष
तथा उसके सम्पूर्ण शासन–काल पर विमर्श

अध्याय : चौदह ... ७६
अमोघवर्ष प्रथम के व्यक्तित्व का मूल्यांकन :
योद्धा एवं कला और साहित्य का संरक्षक
– योद्धा
– धर्म, साहित्य एवं कला का संरक्षक
– धार्मिक एवं प्रजावत्सल
– साहित्यकार एवं साहित्य का संरक्षक
– कला संरक्षक
– चन्द्रगुप्त द्वितीय एवं अमोघवर्ष प्रथम की तुलना

अध्याय : पन्द्रह ... ८७
अमोघवर्ष प्रथम द्वारा जैन–धर्म का संरक्षण एवं
अन्य धर्मों के प्रति सद्भाव
– जैन धर्म का संरक्षक
– अन्य धर्मों के प्रति सद्भाव

अध्याय : सोलह ... ९३
अमोघवर्ष प्रथम की मूर्ति

अमोघवर्ष प्रथम का वंश–वृक्ष ... ९७

मान चित्र : अमोघवर्ष प्रथम का राज्य विस्तार ... ९८

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ... ९९

शब्दानुक्रमणिका ... १०९

❖

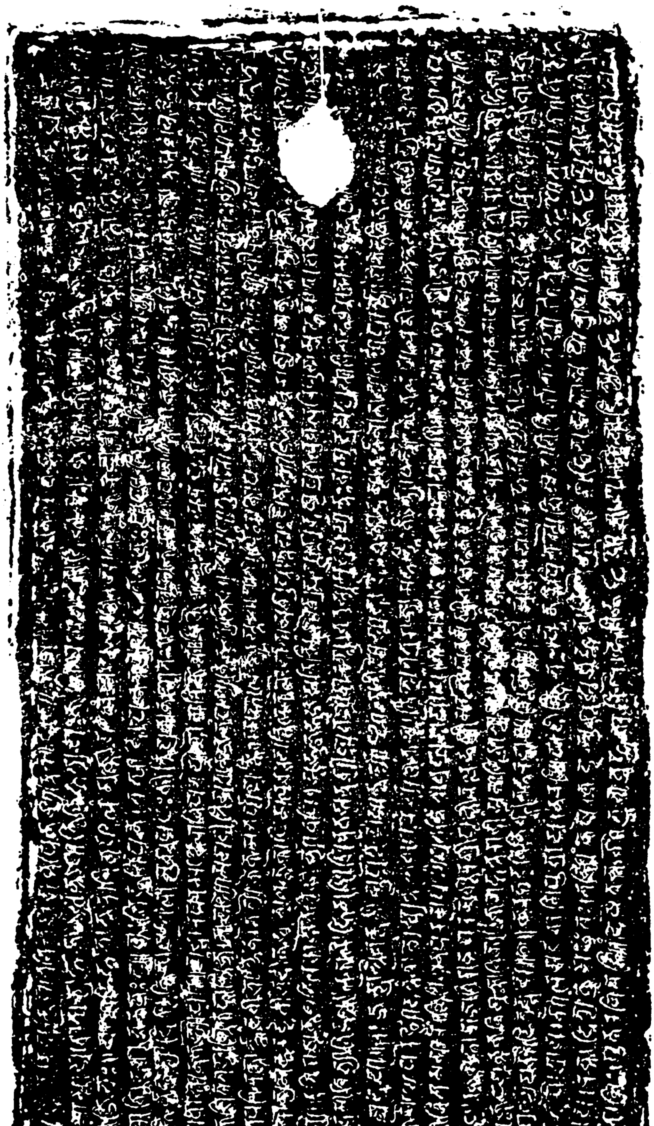

संजान अभिलेख की एक ताम्र पट्टिका

अध्याय १

अमोघवर्ष प्रथम के शासन के पूर्व की पृष्ठभूमि

१

अमोघवर्ष प्रथम के शासन के पूर्व की पृष्ठभूमि

वातापी (बादामी) के चालुक्य शासक विजयादित्य द्वितीय (७३३-७४७ ई.) की मृत्यु के उपरान्त राष्ट्रकूट सामन्त दन्तिदुर्ग ने गुर्जर और मालव देश को विजित करके मध्य एवं दक्षिण गुजरात तथा पूरे मध्य प्रदेश के क्षेत्र पर लगभग ७५० ई. तक अपना आधिपत्य जमा लिया। ई. ७५३ के अन्त में चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन् द्वितीय को खानदेश में हुए युद्ध में परास्त करके दन्तिदुर्ग ने स्वतन्त्र राष्ट्रकूट शासन की नींव डाली। दन्तिदुर्ग के उपरान्त उसके पुत्र कृष्ण प्रथम (लगभग ७५८-७८० ई.) एवं द्वितीय पौत्र ध्रुव (लगभग ७८०-७९३ ई.) ने राज्य किया।

राष्ट्रकूट वंश का प्रतापी शासक गोविन्द तृतीय (लगभग ७९३-८१४ ई.) अपने दिग्विजय अभियान के दौरान उत्तरी भारत एवं पूर्वी भारत के शासकों को परास्त करता हुआ जब पश्चिम की ओर बढ़ा तो विन्ध्यपाद के श्रीभवन नामक नगर के शासक शर्व ने उसकी आव-भगत अपनी राजधानी में की। गोविन्द तृतीय ने वर्षाकाल का अधिकांश श्रीभवन में ही व्यतीत किया। इस विश्राम-काल में गोविन्द तृतीय को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इस बालक का नाम शर्व रखा गया।[१] यही बाद में अमोघवर्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गोविन्द तृतीय के उत्तरी अभियान की समाप्ति लगभग ८०० ई. तक हो गयी थी।[२] अतः शर्व के जन्म की तिथि लगभग ८०१ ई. मानी जा सकती है।

उत्तर, पूर्व एवं मध्य भारत की विजय के उपरान्त गोविन्द तृतीय को दक्षिण में पल्लव, पाण्ड्य, केरल एवं गङ्ग शासकों के उठ खड़े हुए विरोधी गुट को पुनः परास्त करने जाना पड़ा।[३] दक्षिण की ये विजयें[४] ८०२ ई. के अन्त से पहले ही पूरी हो चुकी थीं।[५] गोविन्द तृतीय इन दक्षिण भारतीय विजयों के उपरान्त शान्तिपूर्वक शासन करता रहा। ८१४ ई. तक उसके शासन काल में किसी प्रकार की अशान्ति की बात किसी स्रोत से ज्ञात नहीं होती। गोविन्द तृतीय

की राजनीतिज्ञता एवं उसके दृढ़ शासन का ही परिणाम माना जाना चाहिए कि अपने राज्य के चारों ओर के पड़ोसी शासकों को पराजित करके उसने अपने अन्तिम बारह वर्ष शान्तिपूर्वक व्यतीत किये। यह सारी शान्ति गोविन्द तृतीय के व्यक्तित्व का परिणाम थी। सम्भवतः उसके सामन्त एवं करद शासक केवल दिखावे के लिये ही राष्ट्रकूट सत्ता की अधीनता स्वीकार किये हुए थे जैसा कि गोविन्द तृतीय के उपरान्त पुत्र की बाल्यावस्था का लाभ उठाकर सामन्तों द्वारा विरोध कर राजसत्ता अपने हाथों ले लेने की घटना[६] से जान पड़ता है। अमोघवर्ष प्रथम के शासन के प्रारम्भ की यह घटना गोविन्द तृतीय के काल से ही चले आते सामन्तों एवं अधीनस्थ शासकों के असन्तोष एवं विरोधी तथा विद्रोही प्रवृत्तियों का द्योतन करती है।

❖

पादटिप्पणी

१. सञ्जान अभिलेख, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १८, पृष्ठ २४५–६, श्लोक २५–६ ।
प्रत्यावृतः प्रातिराज्यं विधेयं कृत्वा रेवामुत्तरं (रां) विन्ध्यपादे।
कुर्वन्धर्मान्कीर्त्तनैः पुण्य (वृ) न्दैरध्यष्टात्तान्सो(स्वो) चितां राजधानी(र्नी)।।
मण्डलेश(शो) महाराज(:) सर्व्वस्व(शर्व्वःस्वो) यदभूद्भुवः।
महाराजसर्व्व(शर्व्वः) स्वामी भावी तस्य सुतोजनि।।

२. द्रष्टव्य, ए.एस. अल्तेकर, **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज**, आर.सी. मजुमदार एवं अन्य सम्पादित, बम्बई, १९६४, पृष्ठ ८; पृष्ठ १८ पर पादटिप्पणी १७ भी।

३. सञ्जान अभिलेख, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १८, पृष्ठ २४६, श्लोक ३०।

४. **वही**, श्लोक ३२।

५. द्रष्टव्य, ए.एस. अल्तेकर, **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज**, पृष्ठ ८१।

६. द्रष्टव्य, 'अशान्ति एवं उपद्रव का आरम्भ' उत्तरांश, अध्याय ५, पृष्ठ ३३ ।

❖

अध्याय २

गोविन्द तृतीय की मृत्यु

२

गोविन्द तृतीय की मृत्यु

गोविन्द तृतीय के तोर्खेडे अभिलेख की तिथि १४ दिसम्बर ८१२ ई. है।[1] गोविन्द तृतीय के शासन-काल की यह अन्तिम ज्ञात तिथि है। इस बात की सम्भावना की पुष्टि अमोघवर्ष प्रथम के सिरूर अभिलेख से प्राप्त तिथि से भी होती है। सिरूर अभिलेख की तिथि ज्येष्ठ शुक्ल १, शक सम्वत् ७८८ अमोघवर्ष प्रथम के ५२वें शासन-वर्ष की कही गयी है।[3] इससे यह स्पष्ट है कि अमोघवर्ष प्रथम का शासन शक सम्वत् ७८८ से लगभग ५२ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ। गणनानुसार ५१ वर्ष पूर्व की उपर्युक्त तिथि शक सम्वत् ७३७ में पड़ेगी। यह तिथि मई या जून ८१५ ई. में पड़ती है। इस समय तक अमोघवर्ष प्रथम का प्रथम शासन-वर्ष पूरा हो चुका होगा। अतः अमोघवर्ष प्रथम का सिंहासनारोहण मई-जून ८१३ई. से मई-जून ८१४ ई. के बीच ही कभी हुआ होगा। इस प्रकार गोविन्द तृतीय की मृत्यु ८१४ ई. के प्रारम्भ में हुई जान पड़ती है।

❖

पादटिप्पणी

१. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ३, पृष्ठ ५४, पंक्ति १–२।
शक नृपकालातीत संवत्सरशतेषु सप्तसु पंचतृं(त्रिं)शत्यधिकेषु पौष शुद्ध सप्तम्यामंकतोपि ७३५ नन्दनसंवत्सरे पौषः ७ (शक सम्वत् ७३५, पौषः शुक्ल ७ = १४ दिसम्बर ८१२ ई.)।

२. **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १२, पृष्ठ २१९, पंक्ति १५–१६, १९–२०।
शकनृपकालातीतसंवत्सरंगल(एल नूड)ण भट्टेणटनेय व्ययमेम्ब स (÷)वत्सरं प्रवर्त्तिसे।
जे(ज्ये)ष्ट(ष्ठ) मासादम(मा)सेयुमादित्यवार(मु)मागे सूर्यग्रहणदन्दु
(व्यय नामक शक सम्वत् ७८८, ज्येष्ठ, शुक्ल १, सूर्यग्रहण, रविवार)।

३.. **वही,** पंक्ति १६–१७।

श्रि(श्री)मदमोघवर्ष नृपतुंगनामांकितना विजयाराज्यप्रवर्द्द (र्द्ध) मानसंवत्सरंगळयवत्तेरडुमुत्तरोत्तरं राज्याभिवृद्धि सलुत्तिरे (।) (अमोघवर्ष के शासन का ५२वाँ वर्ष)।

❖

अध्याय ३

अमोघवर्ष का सिंहासनारोहण

३

अमोघवर्ष प्रथम का सिंहासनारोहण

अमोघवर्ष की राज्य भार वहन की योग्यता

गोविन्द तृतीय की मृत्यु के समय (८१४ ई. का प्रारम्भ)[१] सञ्जान अभिलेख के अनुसार उसका पुत्र शर्व राज्य-भार वहन करने के योग्य था।[२] शर्व का जन्म गोविन्द तृतीय की उत्तरी भारत के विजयों के उपरान्त हुआ था जिसकी तिथि ए. एस. अल्तेकर ने पहले ८०८ ई. मानी थी।[३] इस तिथि के अनुसार गणना करके उन्होंने सिंहासनारोहण के समय शर्व की आयु लगभग ६ वर्ष मानी थी।[४] शर्व की यह आयु सञ्जान अभिलेख द्वारा प्रस्तुत तथ्य के विपरीत पड़ती थी। अल्तेकर ने सञ्जान अभिलेख के उपरिसन्दर्भित श्लोक को वस्तुस्थिति से दूर साहित्यिक वर्णन मान कर इस समस्या का समाधान किया।[५] बाद में गोविन्द तृतीय की विजयों के कालक्रम पर उन्होंने पुनर्विचार करके नया मत प्रस्तुत किया कि गोविन्द तृतीय की उत्तरी भारत की विजयें लगभग ८०० ई. तक समाप्त हो चुकी थीं।[६] इसके अनुसार उन्होने सिंहासनारोहण के समय शर्व की आयु १३-१४ वर्ष मानी।[७] इस आयु में सञ्जान अभिलेख में शर्व का राज्य-भार वहन करने योग्य कहा जाना असंगत नहीं माना जाना चाहिए। इस समय तक शर्व अमोघवर्ष का विवाह हो चुका था अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। उसकी छोटी ही आयु में पिता की मृत्यु एवं उसके सिंहासनासीन होने के कुछ ही समय उपरान्त उठ खड़ी हुई राजकीय परेशानियों के कारण बहुत सम्भव है कि उसका विवाह बाद में हुआ हो। इस बात की सम्भावना असंगत नहीं जान पड़ती कि अमोघवर्ष प्रथम का विवाह उसके शासन की प्रारम्भकालीन प्रशासकीय कठिनाइयों की समाप्ति के उपरान्त हुआ हो।[८]

राजधानी मान्यखेट

अमोघवर्ष प्रथम का सिंहासनारोहण उसके पिता गोविन्द तृतीय की राजनगरी[९] में ही हुआ होगा। इस राजनगरी के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। अमोघवर्ष प्रथम के जवखेड अभिलेख के आधार पर डी. आर. भट ने निस्वपुरक नामक स्थान को अमोघवर्ष प्रथम की पूर्व राजधानी मानने का सुझाव दिया है,[१०] जहाँ से बाद में राजधानी मान्यखेट नामक स्थान (वर्तमान मालखेड) लायी गई। भट द्वारा निस्वपुरक के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किये गए मतों में एक वृद्धि के अतिरिक्त कुछ और नहीं जान पड़ता। कक्र्क द्वितीय के कर्डा अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट जो इन्द्र की राजधानी से भी अनुपम थी, की स्थापना अमोघवर्ष प्रथम ने की। मान्यखेट को गुलबर्ग जिले के वर्तमान मालखेड से पहचाना गया है। अमोघवर्ष प्रथम का प्रासाद विशद् अन्तःपुर एवं तड़ाग से युक्त निर्मित किया गया था।[११]

अमोघवर्ष प्रथम के विभिन्न विरुद

शर्व की प्रसिद्धि **अमोघवर्ष** नाम से रही। इतिहास में वह **अमोघवर्ष प्रथम** के नाम से जाना जाता है। अमोघवर्ष प्रथम ने **नृपतुङ्ग, महाराज षण्ड, वीरनारायण, अतिशयधवल, त्रिभुवनवल्लभ, दुर्लभ, कृतकृत्यमल्ल, नरलोकचन्द्र, नीतिनिरन्तर, नित्यमल्लवल्लभ, रट्टमार्तण्ड, गुर्जरनरेन्द्र** उपाधियाँ भी धारण की।[१२]

❖

पादटिप्पणी

१. द्रष्टव्य, 'गोविन्द तृतीय की मृत्यु' पूर्वांश, **अध्याय** २, पृष्ठ १६।

२. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १८, पृष्ठ २४६–७, श्लोक ३५
यास्या(व्याप्ता)कीर्त्तिस्तृलोक्या(स्त्रिलोकीं)न्निंज(निज) भुवनभरं
भर्त्तुमासीत्समर्थः पुत्रश्चास्माकमेकस्सफलमितिकृतं ज्जन्म(जन्म) धर्म्मेनेकैः।
किं कर्त्तु (ः) स्थेयं(स्थेय)मस्मिन्निति विमल् पुण्यशो(सो)पानमार्ग्गं
स्वर्ग्गप्रोत्तंगसौध(ः) प्रतिरदनुपमः {यद्} कीर्त्तिम्रे(मे)वानुयान्तः(तः)।।

३. **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स,** पूना, १६३४, पृष्ठ ६८।

४. **वही,** पृष्ठ ७२।

५. **वही,** पृष्ठ ७२ पाद टिप्पणी।

६. **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज,** पृष्ठ ८ ; पृष्ठ १८ पर पाद टिप्पणी १७ भी द्रष्टव्य।

७. **वही,** पृष्ठ ८।

८. द्रष्टव्य, आगे **अध्याय** ६, **पृष्ठ** ४०।

९. अमोघवर्ष प्रथम द्वारा स्थापित मान्यखेट नामक राजधानी से पूर्व की राष्ट्रकूट राजधानी के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं है। इस सम्बन्ध में विद्वानों ने मान्यखेट, मयूरखिण्डि, नासिक, लाटूर, पैठान, एलिचपुर, सूलूबुञ्जन नामक स्थानों की राजधानी होने की सम्भावना पर विचार किया है (द्रष्टव्य, ए. एस. अल्तेकर, **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स,** पृष्ठ ४५–८)।

१०. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ३२, पृष्ठ १३०। डी. सी. सरकार ने निस्वपुरक को एक ग्राम–नाम मात्र स्वीकृत किया है (**वही,** पादटिप्पणी ३)।

११. कर्क्क द्वितीय का कर्डा अभिलेख, **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १२, पृष्ठ २६४–५, पंक्ति १३, १४–५।
तस्य श्रीमद्मोवर्षनृपतिश्चालुक्यकालानलः।

... ...

आसीदिन्द्रपुराधिकं पुरमिदं श्रीमान्यखेटाभिधानं।
येनेदं च सरः कृतं गुरुकरुप्रासादमन्तःपुरं।।

१२. कृष्ण तृतीय के कार्हाड (**एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ४, पृष्ठ २८३, श्लोक १३) एवं देओली अभिलेख (**वही,** भाग ५, पृष्ठ १९३, श्लोक १२) से भी इसकी पुष्टि होती है।

यो मान्यखेटममरेन्द्रपुरोपहासि
गीर्व्वागर्व्वमिव खर्व्वयित(तुं) व्यधत्त ।

१३. द्रष्टव्य, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, पृष्ठ १७४ एवं आगे; **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग ३३, पृष्ठ १९७ ; **साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शंस,** भाग ११, खण्ड १, पृष्ठ ४ ; **कसायपाहुड,** जयधवला टीका सहित, फूलचन्द्र एवं अन्य सम्पादित, मथुरा, १९४४, भाग १, प्रस्तावना, पृष्ठ ७३–७४ ; **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ३२, पृष्ठ १३० ; **जर्नल ऑफ दि ओरियन्टल इंस्टिच्यूट,** बड़ोदा, भाग २०, संख्या २, पृष्ठ १६१ ; **गुर्जरनरेन्द्र** विरुद के सम्बन्ध में अमोघवर्ष प्रथम के व्यक्तित्व का मूल्यांकन : योद्धा एवं कला और साहित्य का संरक्षक शीर्षक अन्तरांश की अन्तिम पाद टिप्पणी १८, आगे **अध्याय** १४, पृष्ठ ६८ भी द्रष्टव्य।

❖

अध्याय ४

शासन के प्रारम्भिक दिन

४

शासन के प्रारम्भिक दिन

ऐसा जान पड़ता है कि गोविन्द तृतीय ने गुजरात शाखा के राष्ट्रकूट शासक अपने भाई इन्द्र के पुत्र कक्र्क सुवर्णवर्ष को अमोघवर्ष प्रथम के संरक्षक के रूप में नियुक्त किया था। यह बात कक्र्क सुवर्णवर्ष के सूरत अभिलेख[१] तथा गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों के अन्य अभिलेखों से भी अनुमानित होती है। सूरत अभिलेख में अमोघवर्ष प्रथम के राज्य को संघटित करने का श्रेय कक्र्क सुवर्णवर्ष को दिया गया है।[२] अमोघवर्ष प्रथम के सञ्जान अभिलेख में यह श्रेय पातालमल्ल को दिया गया है।[३] भगवान लाल इन्द्र जी का यह मत था कि पातालमल्ल कक्र्क सुवर्णवर्ष का ही विरुद था।[४] इस सम्बन्ध में ए.एस. अल्तेकर ने भी यही मत निर्धारित किया है।[५]

अमोघवर्ष प्रथम के शासन के प्रारम्भिक दिनों में राज्यकार्य ढंग से चल रहा था, जैसा कि ८१७ ई. में लिखवाये गए कक्र्क सुवर्णवर्ष के नौसरी अभिलेख से ज्ञात होता है।[६] इस अभिलेख में अमोघवर्ष प्रथम ही शासक के रूप में उल्लिखित है।[७] इस प्रकार ८१६-७ ई. तक अमोघवर्ष प्रथम के शासन में किसी प्रकार के उपद्रव, अशान्ति एवं सामन्तों आदि के स्वतन्त्र होकर राज्य करने का संकेत नहीं प्राप्त होता।

❖

पादटिप्पणी

१. द्रष्टव्य, **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग २१, पृष्ठ १४३, श्लोक ३७, ३६।
श्री कर्क्कराज इति रक्षिरात(रक्षित) राज्यभारस्मारकुलस्य तनयो नयशालिसौ (शौ)र्य्यः।
श्वे(स्वेच्छा)(च्छ्रा)गृहीतविषया(न्) दृढ़सङ्घभाजः
प्रोद्वृत्तदृप्ततरशैक्लि(शोल्किक)तराष्ट्रकूटानु
त्खातखङ्गनिजवा(बा)हु व(ब)लेन जित्वा।
योमोघवर्षमचिरात्स्वपदे व्यधत्त ।।

२. **वही**।

३. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग १८, पृष्ठ २४७, श्लोक ४१।
सोयं गुरुवु(बु)ध मनुयातस्सार्य (सोर्य)
पातालमल्लादुदयगिरिमहिम्नो रट्टमर्ताण्डदेवः ।

४. **बाम्बे गजेटियर**, भाग १, खण्ड १, बम्बई, १८६७, पृष्ठ १२४।

५. **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ७२–७३, पादटिप्पणी ३१।

६. **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी**, भाग २०, पृष्ठ १३६, श्लोक २६–३०।
तत्पुत्रोत गते नाकमाकम्पितिरिपुव्रजे।
श्री महाराजशर्व्वाख्यः ख्यातो राज भवद्‌गुणैः।।
अर्त्थिषु यथार्थता यः समभीष्टफलाब्ति (प्ति) लब्धतोषेषु ।
वृद्धिं निनाय परमामोघवर्षाभिधानस्य ।।

❖

अध्याय ५

अशान्ति एवं उपद्रव का आरम्भ

अशान्ति एवं उपद्रव का आरम्भ

अमोघवर्ष प्रथम के शासनकाल में कुछ विरोधी शक्तियों के उठ खड़े होने की बात कुछ राष्ट्रकूट अभिलेखों से ज्ञात होती है। इस परिस्थिति का उल्लेख ध्रुव प्रथम के ८३५ ई. में लिखवाए गए बड़ोदा अभिलेख[१] एवं कक्क सुवर्णवर्ष के ८२१ ई. में लिखवाए गए सूरत अभिलेख[२] में प्राप्त होता है जिनमें कक्क सुवर्णवर्ष द्वारा अमोघवर्ष प्रथम को सिंहासन पर पुनरासीन किए जाने की बात कही गई है। कक्क सुवर्णवर्ष के ८१७ ई. के नौसारी अभिलेख[३] में किसी प्रकार के उपद्रव की चर्चा नहीं है। अतः उल्लिखित विद्रोह ८१७ से ८२१ ई. के बीच कभी हुआ। अमोघवर्ष प्रथम के सञ्जान अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि राजपरिवार में झगड़े शुरू हो गए थे, मन्त्रीगण राज्य के प्रति उदासीनता बरतते थे, गङ्ग शासक ने स्वतन्त्रता घोषित कर दी थी और उपद्रवी सामन्तों ने राजकीय हत्याएँ तक कीं।[४] यह उपद्रव गम्भीर एवं कुछ अर्से तक रहा होगा। इसी अभिलेख में अमोघवर्ष रूपी सूर्य के अस्त होने एवं उसके पुनः उदय होने की बात कही गई है,[५] जिससे अमोघवर्ष प्रथम के शासन के कुछ समय के लिए समाप्त हो जाने की बात जान पड़ती है। इस बात की पुष्टि कृष्ण द्वितीय के ९१० ई. के कापडवञ्ज अभिलेख से भी होती है जिसमें अमोघवर्ष प्रथम द्वारा खोए हुए राज्य की पुनर्प्राप्ति का उल्लेख है।[६] विरोधी शक्तियों की सक्रियता सम्भवतः इस कारण बढ़ गई होगी कि अमोघवर्ष प्रथम अभी किशोर ही था। सामन्तों एवं मन्त्रियों ने शासक की अल्पायु का लाभ उठाते हुए अपने-अपने स्वार्थ को साधना चाहा होगा। उनका असन्तोष बहुत सम्भव है गोविन्द तृतीय के समय से ही रहा हो जो अमोघवर्ष प्रथम की अल्पायु का लाभ लेकर प्रत्यक्ष हो उठा।

❖

पादटिप्पणी

१. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १४, पृष्ठ १६६, श्लोक १०।
२. **एपिग्रफिया इण्डिका**, भाग २१, पृष्ठ १४१, श्लोक ३७, ३६ (उपर्युद्धृत)।
३. **दि जर्नल ऑफ दी बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी**, भाग २०, पृष्ठ १३३ एवं आगे।
४. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग १८, पृष्ठ २४७, श्लोक ३६ – ६।
व(ब)न्धूनां व(ब)न्धुराणामुचितनिजकुले पूर्व्वजानां(म)प्रजानां
जातानां बल्लभानां भुवनभरितसत्कीर्त्तिमूर्तिस्थितां(तानाम्) {।}
त्रातुं कीर्ति(÷) सलोका कलिकलुषमथो हंतुमतो रिपूणां
श्रीमान्सि(÷)हासनोस्थो वु(बु)धनुचरितोमोघवर्ष(:) प्रशास्ति ।।
त्त्रा (त्रा) तु(÷) नम्रन्विजेतु रणशिरसि परान्प्राथ(र्थ)केभ्य
प्र(ा)दातुं निर्व्वोढुं रूढ़िसत्यं धरणिपरिवृढो नेदृशोन्यः (समर्थः) {।}
इत्थं प्रोत्थाय सार्थं पृथुरवपदढक्कादिमन्द्रप्रघोषो
यस्यो(स्ये)न्द्रस्येव नित्यं ध्वनति कलिमलध्वन्सि(ध्वंसि)नो मन्दिराग्रे ।।
दृष्ट्वा तन्नवराज्यमूर्ज्जि {त} वृ(बृ)हद्धर्म्मप्रभावं नृपं
भूय(:) षोड़शराज्यत्कृतयुग प्रा(युगप्रा)रम्भ इत्याकुलः {।}
नश्यन्नन्तरनुप्रविश्य विषमो मायामयोसौ कलिः
सामन्तान्सचिव(वा)न्स्ववा(बा)न्धवजनानक्षोभयत्स्पीकृताम्(न्) ।।
शठमत्त्रं (न्त्रं) प्रविधाय त्कू(कू)टशपथैरोशस्वतंत्त्रा(त्राः) स्वयं
विनिहत्योचितयुक्तकारिपुरुषान्सर्व्वे स्वयंग्राहिणः ।
परयोषिदु(द्दु)हिता स्वसेति न पुनर्भेद पशूनामिव
प्रभुरेवं कलिकालमि(इ)त्यवसितं सद्वृत्तमुधृत्तः(द्धृतः) ।।
५. **वही**, श्लोक ४०–४१।
विततमहिमधाम्नि व्योम्नि संहृत्य धाम्नातिवर्ति महातीन्द्रोर्म्मण्डलं ।
उदयमहिमभाजो भ्राजितास्सप्रतापे विरतवति
विजिह्माश्चोर्ज्जितास्तावदेव(:) ।।
गुरुवु(बु)धमनुयातस्सार्यपातालमल्लादुदयगिरिमहिम्नो रट्टमार्तण्डदेवः ।
पुनरुदयमुपेत्योधृ(द्धृ)त्ततेजस्विचक्रं प्रतिहतमथ
कृत्वा लोकमेक(:) पुनाति ।।

६. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १, पृष्ठ ५४, श्लोक ६।
सुनुत(स्त)स्यातिवीरः सकलगुणगणाकारभूतो वभूव(:)
भूपालात्कंटिकाभि(न्कण्टकाभान्) सपदि घिटितान्वेष्ट(ष्ठ)यित्वा ददाह ।
राज्यं यस्या(श्चा)भिमानी रि(नि)जमपि चालितं वाहुवीर्योदधा(वा)प
पृथ्वीमेकातपतां(त्रा)मकुरुत वलवान् श्रीमहाराजषंडः ।।

❖

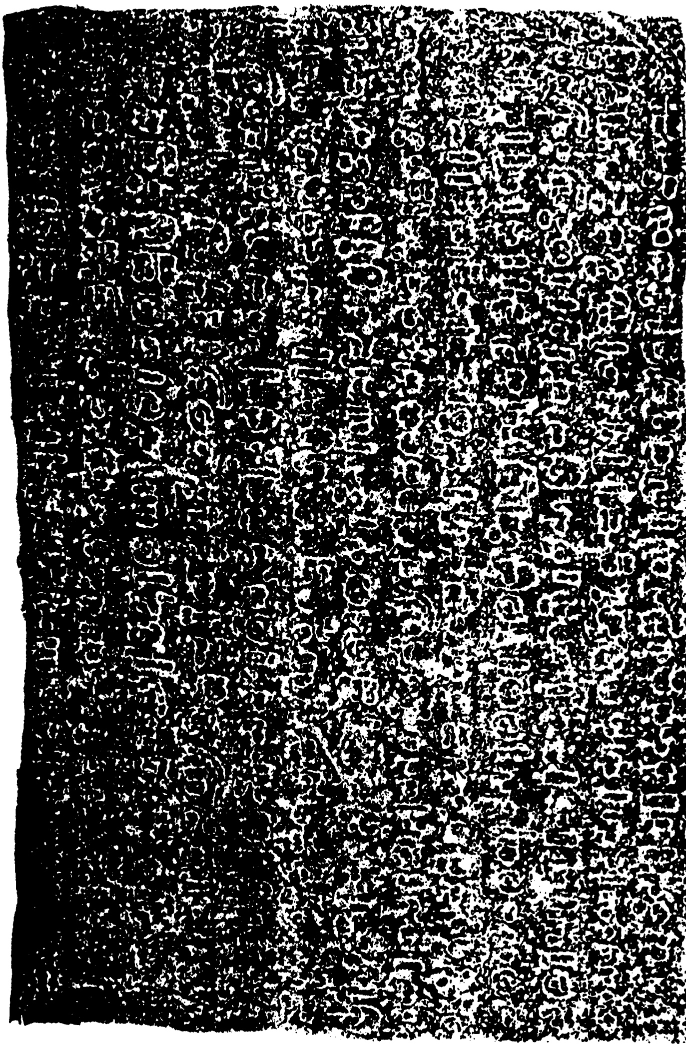

नीलगुंड अभिलेख की एक ताम्र पट्टिका

अध्याय ६

अमोघवर्ष प्रथम के समय के चालुक्य-राष्ट्रकूट संघर्ष की परिणति

६

अमोघवर्ष प्रथम के समय में चालुक्य-राष्ट्रकूट संघर्ष की परिणति

गोविन्द तृतीय के बाद चालुक्य शासन का पुनरोद्भव

चालुक्य शासक विजयादित्य द्वितीय को गोविन्द तृतीय ने ८०२ ई. के पूर्व ही पराजित किया था और चालुक्य राज्य को उसके छोटे भाई भीम सालुक्कि के हाथों दे दिया था।[१] गोविन्द तृतीय के समय में चालुक्यों की शक्ति दबी रही, किन्तु विजयादित्य द्वितीय अपना राज्य पुनः लेने की तैयारी में लगा रहा और अमोघवर्ष प्रथम के शासन के प्ररम्भ में उसकी किशोरावस्था एवं राष्ट्रकूट राज्य के उपद्रव तथा अशान्ति का लाभ उठाते हुए उसने भीम सालुक्कि से अपना राज्य वापस ले लिया। इस अवसर पर विजयादित्य द्वितीय ने अपनी पूर्व पराजय का भरपूर बदला लिया। चालुक्य समुद्र में राष्ट्रकूट शासन के डूब जाने तक की बातें कही गई हैं।[२] पूर्वी चालुक्यवंशी अम्म प्रथम के एडेरु अभिलेख में विजयादित्य द्वितीय के राष्ट्रकूटों एवं गङ्गों से होने वाले बारहवर्षीय युद्ध के विषय में कहा गया है। इस युद्ध के कुल १०८ युद्धों के होने का उल्लेख है।[३] चालुक्यों का राष्ट्रकूट राज्य पर बहुत दिनों तक अधिकार नहीं रह पाया। इन्द्र तृतीय के बगुमरा अभिलेख में विजयादित्य द्वितीय की राष्ट्रकूट राज्य को अपने हाथ में बनाए रखने की असफलता का उल्लेख हुआ है। इस अभिलेख में कहा गया है कि अमोघवर्ष प्रथम ने चालुक्य समुद्र में डूबे हुए राष्ट्रकूट वैभव को पुनः अर्जित कर लिया।[४] ए. एस. अल्तेकर ने विजयादित्य द्वितीय की सक्रियता को ८१७ ई. में प्रारम्भ हुआ माना है।[५] ८१७ से ८२१ ई. के बीच हुए उपद्रवों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त सुझाव ठीक जान पड़ता है। विजयादित्य द्वितीय का लक्ष्य ८१७ से ८२१ ई. तक सम्भवतः पूरा हो गया था और राष्ट्रकूटों की भारी पराजय हुई थी। लगभग ८१८-८२१ ई. के बीच कर्क्क सुवर्णवर्ष ने अपने प्रयत्नों के फलस्वरूप अमोघवर्ष प्रथम को पुनः सिंहासनासीन किया। ए. एस. अल्तेकर द्वारा दिया गया यह कालक्रम कर्क्क सुवर्णवर्ष के नौसरी एवं सूरत अभिलेखों की

तिथियों तथा सूचनाओं का आधार लिए हुए था। अमोघवर्ष प्रथम के जवखेड अभिलेख की सूचनाओं के आधार पर ही डी. आर. भट ने सिंहासन पर पुनः अधिकार प्राप्त करने की तिथि जून ८२० ई. के पूर्व ही सम्भावित की है।[८] सिंहासनासीन होने की इसी अवधि में सम्भवतः अमोघवर्ष प्रथम का विवाह असगव्वा से सम्पन्न हुआ जो जवखेड अभिलेख में भट्टारिका कही गई है।[९]

राष्ट्रकूटों का स्थिर शासन और चालुक्यों की पराजय

राष्ट्रकूट शक्ति ने राजनीतिक स्थिरता प्राप्त कर एक बार फिर चालुक्य राज्य पर अधिकार किया । अमोघवर्ष प्रथम द्वारा ८६६ ई. में लिखवाए गए सिरूर अभिलेख में वेङ्गी के शासक का अधीनस्थ के रूप में उल्लेख किया गया है।[१०] वेङ्गी पर अमोघवर्ष प्रथम के अधिकार का प्रमाण परवर्ती राष्ट्रकूट अभिलेखों में भी प्राप्त होता है। गोविन्द पंचम के ९३३ ई. में लिखवाए गए साङ्गली अभिलेख में विङ्गवल्ली में चालुक्यों एवं अभ्यूषकों के अमोघवर्ष प्रथम से पराजित होने का उल्लेख है।[११] कृष्ण तृतीय के ९५८ ई. के कर्हाड अभिलेख[१२] में अमोघवर्ष प्रथम द्वारा चालुक्यों के नाश का उल्लेख है।[१३] यही सूचना कर्क्क द्वितीय के ९७२-३ ई. के कर्डा अभिलेख से भी मिलती है।[१४] इन प्रमाणों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अमोघवर्ष प्रथम ने वेङ्िराज को सिरूर अभिलेख की तिथि ८६६ ई. के पूर्व पराजित किया होगा। अमोघवर्ष प्रथम की राजनीतिक परेशानियों तथा विजयादित्य द्वितीय के लगभग ८४३ ई. तक सिंहासन पर होने का ध्यान रखते हुए ए. एस. अल्तेकर ने इस विजय की तिथि ८६० ई. के लगभग माना था।[१५] इस तिथि पर पुनर्विचार करते हुए उन्होंने चालुक्य पराजय की तिथि ८३० ई. सुझाई है। उन्होंने इस तिथि के १२ वर्ष बाद चालुक्यों को राष्ट्रकूट सत्ता की अधीनता में माना है जिसका संकेत अम्म प्रथम के एडेरु अभिलेख में प्राप्त होता है और उसके उपरान्त पाण्डुरङ्ग द्वारा पुनः चालुक्य नगरी वेङ्गी को अधिकृत करने की बात मानी है।[१६] चालुक्य-अधीनता के इतिहास की यह पुनर्रचना बहुत उपयुक्त नहीं जान पड़ती है। इस सम्बन्ध में डी. सी. सरकार का विचार अधिक सही जान पड़ता है जिन्होंने विङ्गवल्ली में चालुक्यों की पराजय को विजयादित्य द्वितीय के बारहवर्षीय युद्धों के उपरान्त ही माना है।[१७] इन घटनाक्रमों को कुछ इस प्रकार माना जा सकता है। ८१८-२१ ई. के बीच कर्क्क सुवर्णवर्ष के प्रयत्नों के फलस्वरूप सम्भवतः अमोघवर्ष प्रथम को राष्ट्रकूट राज्य का एक अंश मात्र ही प्राप्त हो सका। अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के उपरान्त ही राष्ट्रकूट शासन अपने राज्य का शेषांश चालुक्यों से वापस

लेने के लिए तत्पर हुआ होगा। यह प्रयत्न सम्भवतः १२ वर्षों तक चलता है जिसके फलस्वरूप विजयादित्य द्वितीय को युद्धों में व्यस्त रहना पड़ा जिसके बारे में अम्म प्रथम के एडेरु अभिलेख में उल्लेख प्राप्त होता है। इस प्रकार सम्भवतः ८३२ ई. के बाद ही चालुक्यों पर राष्ट्रकूटों की विजय हुई होगी।

राष्ट्रकूट अधीनता में चालुक्यों का स्वतन्त्र शासन : राष्ट्रकूट-चालुक्य वैवाहिक सम्बन्ध

वेङ्गी राष्ट्रकूटों के अधिकार में थी, किन्तु ८४५ ई. के पूर्व ही वेङ्गी को विजयादित्य द्वितीय के सेनापति पाण्डुरङ्ग ने राष्ट्रकूटों से स्वतन्त्र कर लिया था। ऐसा जान पड़ता है कि अमोघवर्ष प्रथम एवं विजयादित्य द्वितीय ने अपने कटु सम्बन्धों को इसी समय राष्ट्रकूट राजकुमारी शीलमहादेवी एवं चालुक्य राजकुमार विष्णुवर्धन् पंचम का विवाह करके मधुर बनाया। ऐसा प्रतीत होता है कि वेङ्गी चालुक्यों के हाथ आ जाने पर भी चालुक्यों को राष्ट्रकूटों की अधीनता स्वीकार किए रहना पड़ा।[१८]

❖

पादटिप्पणी

१. द्रष्टव्य, **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज,** पृष्ठ ८ एवं १३४।

२. **वही,** पृष्ठ १३४।

३. **साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शंस,** भाग १, पृष्ठ ३६, श्लोक २–३।
गंगारट्टबलैस्सार्द्धम्द्वादशाब्दानह(हा)र्न्निशम् {।}
भुजार्ज्जिबलखड्गसहायो नयविक्रमैः {।।}
अष्टोत्तरं युद्धशतम् युद्ध्वा शंभेर्म्महालयान {।}
तत्संख्य(ख्या)याकरौद्वरो विजयादित्यभूपतिः {।।}

४. **एपिग्रफिया इण्डिका,** भाग ६, पृष्ठ ३०, श्लोक १३।
समूलोन्मूलितास्ताम्वान्दण्डेनानीतकण्टकः ।
योदहद्वे(द्द्वे)षिणश्चण्डचलुक्यांश्चणकानिव ।।

५. **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज,** पृष्ठ ६।

६. द्रष्टव्य, 'अशान्ति एवं उपद्रव का आरम्भ' पूर्वांश, अध्याय ५, पृष्ठ ३३।

७. **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज,** पृष्ठ ६।

८. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ३२, पृष्ठ १३०।

९. **वही,** पृष्ठ १३४, पंक्ति ६२। डी. आर. भट ने असगव्वा को अमोघवर्ष प्रथम की पत्नी नहीं माना है क्योंकि अमोघवर्ष प्रथम इस समय कम आयु का था। (**वही,** पृष्ठ १३०), किन्तु डी. सी. सरकार ने असगव्वा को अमोघवर्ष प्रथम की पत्नी माना है। उन्होंने कम आयु में ही विवाहित राम एवं विचित्रवीर्य के उदाहरणों के साथ भट द्वारा प्रस्तुत कम आयु के होने की बात को उनकी मान्यता के लिए उपयुक्त कारण नहीं माना है (**वही,** पृष्ठ १३०, पादटिप्पणी २)। गोविन्द तृतीय की मृत्यु के समय अमोघवर्ष प्रथम की आयु कम थी। इस कम आयु (लगभग १३–१४ वर्ष) में सम्भवतः उसका विवाह न हुआ रहा होगा। पिता के राज्य का उत्तराधिकारी होने के कुछ ही दिनों उठ खड़ी हुई राजकीय परेशानियों के कारण उसके विवाह में देर हुई होगी। किन्तु ८२० ई. के पूर्व ही उसके राज्य की पुनर्प्राप्ति एवं विजयोल्लास तथा राजकीय मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उस अवसर पर उसके विवाह संस्कार के सम्पन्न होने की सम्भावना की जा सकती है। इस समय उसकी १८–१९ की आयु भी विवाह के उपयुक्त थी। इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए

डी. सी. सरकार का मत ही संस्तुत होता है।

१०. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पंक्ति ६।
.... वंग अंग मगध मालव वेंगीशैर्च्चितोतिशयधवल

११. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ २४६ – ५०, पंक्ति १२–३।
तस्माच्चामोघवर्षोभवदतुलव(ब)लो
येन कोपादपूर्व्वैश्चालुक्याभ्यूषाद्यै –
र्ज्जनितरतियमः प्रीणितो विंगवल्यां ।

१२. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग १३, पृष्ठ १७६ एवं आगे।

१३. **वही**, भाग ४, पृष्ठ २८३, श्लोक १४।
चालुक्यवंश दहता(तो) यदीय (प्र)तापवह्नेरभिलब्धं(ब्ध)जन्मा ।
व्र(ब्र)ह्माण्डाभाण्डोदर ..... नाद्यपि विश्रान्तिमुपैति शव्द(ब्द): ।।

१४. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पुष्ठ २६४, पंक्ति १३।
तस्य श्रीमदमोघवर्षनृपति चालुक्यकालानलः।

१५. **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ७५ – ६।

१६. **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज**, पृष्ठ ६।

१७. **वही**, पृष्ठ १३४ – ५ । डी. सी. सरकार ने किसी तिथि का उल्लेख नहीं किया है।

१८. द्रष्टव्य, **वही**, पृष्ठ १३५।

❖

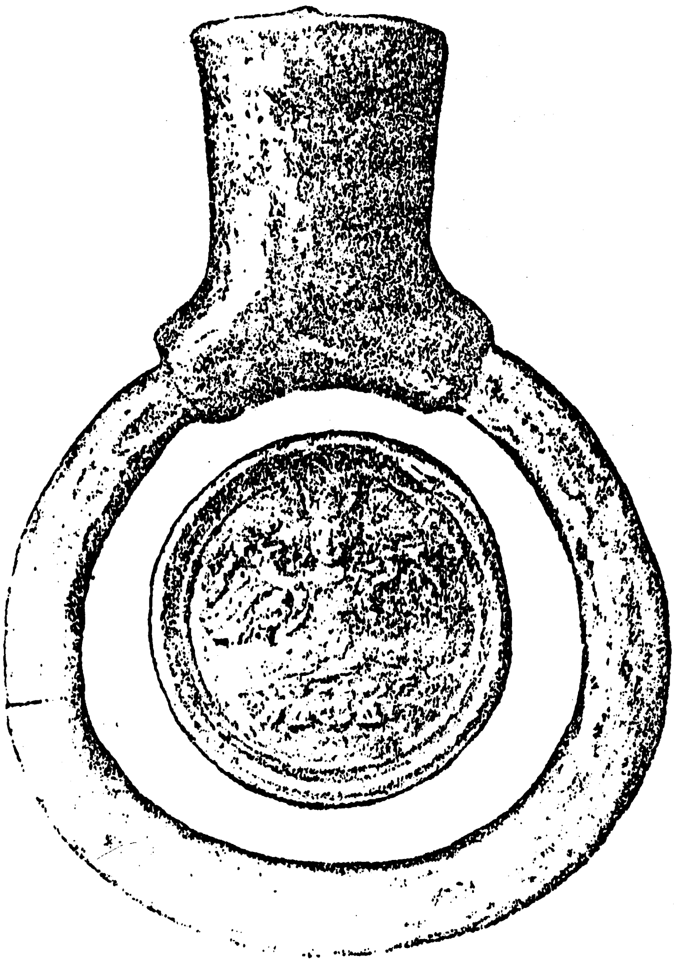

जवखेड अभिलेख की ताम्र मुद्रा

अध्याय ७

गङ्ग-राष्ट्रकूट सङ्घर्ष
एवं
अमोघवर्ष प्रथम का दक्षिणी अभियान

७

गङ्ग-राष्ट्रकूट सङ्घर्ष एवं अमोघवर्ष प्रथम का दक्षिणी अभियान

अमोघवर्ष प्रथम के शासन-काल में दक्षिण के पड़ोसी राज्यों द्वारा राष्ट्रकूट राज्य पर आक्रमण के संकेत भी मिलते हैं। अमोघवर्ष प्रथम के कोन्नूर अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि वनवासी के शासक बङ्केय ने एक गङ्ग शासक को हराया था।[१] इस गङ्ग शासक को पृथिवीपति द्वितीय से पहचाना गया है[२] जिसने उदयेन्द्रियम अभिलेख[३] के अनुसार अमोघवर्ष प्रथम से डिण्डी के पुत्रों की रक्षा की थी।[४] बङ्केय ने कावेरी पार करके अन्य क्षेत्रों पर भी धावा बोला था, किन्तु वल्लभ एवं अमोघवर्ष प्रथम के एक पुत्र द्वारा किए गए उपद्रव को दबाने के लिए आज्ञा पाने पर उसे लौटना पड़ा था।[५] प्राप्त विवरण के आधार पर ए. एस. अल्तेकर का यह निष्कर्ष उचित जान पड़ता है कि अमोघवर्ष प्रथम के दक्षिणी अभियान मुख्यतया आत्मरक्षार्थ थे। विजय प्राप्ति की दृष्टि से उसने स्वयं कोई कदम नहीं उठाया। इसकी पुष्टि अग्रोल्लिखित घटनाओं से भी होती है। अमोघवर्ष प्रथम के शासन के प्रारम्भ में ही गङ्गवाडि के स्वतन्त्र हो जाने पर उसे पुनः राष्ट्रकूट शासन में नहीं लाया जा सका। गङ्गों के उपद्रवों को शान्त करने की दृष्टि से ही सम्भवतः वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से सद्भावना उत्पन्न करनी पड़ी। ऐसे सम्बन्ध का प्रारम्भ अमोघवर्ष प्रथम की सम्भवतः प्रथम सन्तान पुत्री रेवतीनिम्मडि के गङ्ग परिवार में हुए विवाह[६] के समय से ही माना जा सकता है। राष्ट्रकूटों एवं गङ्गों के राजनीतिक सम्बन्धों को लगभग ८६० ई. में अमोघवर्ष प्रथम की द्वितीय पुत्री चन्द्रोबलब्बा एवं गङ्ग राजकुमार भूतुग के विवाह[७] के माध्यम से और पुष्ट किया गया। सम्भवतः दक्षिण में पल्लवों से भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए गए। पल्लव शासक नन्दिवर्मन् तृतीय ने शंखा नामक राष्ट्रकूट राजकुमारी से विवाह किया था जिसे अमोघवर्ष प्रथम की पुत्री होने की सम्भावना की जा सकती है।[८]

❖

पादटिप्पणी

१. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग ६, पृष्ठ ३०, श्लोक २२।
महाप्रतापपादुच्छेद(दुश्छेदा)मुदयच्छन्मदिच्छया {।}
मूलादुच्छेतुमुत्तुंगां गंगवाडि वटावटवीं {।।}
श्लोक २३ – २४ भी द्रष्टव्य।

२. द्रष्टव्य, ए. एस. अल्तेकर, **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ७८ ।
इस समय वह शासक नहीं था।

३. **साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शंस**, भाग २, पृष्ठ ३८४, श्लोक १६।
यो डिण्डिकोजेरिमनागदन्दौ(दन्तौ)ररक्ष भीताबभै(भ)यप्रदानात् {।}
क्षोणीपतेरेकमोघवर्षात्म(त्मृ)त्योम्मु(र्मु)रवादन्यमन्यतुल्य {।।}

४. **एपिग्रफिया इण्डिका**, भाग ६, पृष्ठ ३१, श्लोक २७ – ८।
कावेरीं गुरुपूरदुर्ग्गममामुल्लंघ्य सिंह {क्र} मात्प्रत्यग्रस्पुरित –
प्रतापदहयप्रोथच्छिखाश्रेणिभिः {।}
निर्द्दह्यैकपदेन सप्तपदकान्विद्विड्वनोच्छेदिना
येनाकंपि जगत्प्रकंपनपटोर्व्वैराज्यमप्यूर्ज्जित ।।
तत्रान्तरे मदंतिकमन्तर्भ्भे(र्भ्भे)देन जातसंक्षोभे।
प्रत्यागन्तव्यमिति त्वयेति मद्वचनमात्रेण ।।

५. **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ७८।

६. द्रष्टव्य, **साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शंस**, भाग ११, प्रस्तावना, पृष्ठ ३ एवं अभिलेख संख्या ७, पृष्ठ ४, पादटिप्पणी भी।

७. **एपिग्रफिया इण्डिका**, भाग १२, नञ्जनगुड अभिलेख संख्या २६६, सप्लिमेन्ट, पृष्ठ १–४।

८. द्रष्टव्य, डी. सी. सरकार, **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज**, पृष्ठ १६६।

❖

अध्याय ८

अमोघवर्ष प्रथम के काल का अन्तिम उपद्रव तथा गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों के विद्रोह का प्रश्न

८

अमोघवर्ष प्रथम के काल का अन्तिम उपद्रव तथा गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों के विद्रोह का प्रश्न

अमोघवर्ष प्रथम के शासन-काल में गुजरात में शासन कर रहे राष्ट्रकूट परिवार के विद्रोही हो जाने की घटना को इतिहासकारों में विशेष महत्व दिया है। गोविन्द तृतीय ने गुजरात का शासन ८०० ई. में अपने भाई इन्द्र के हाथों में दिया था।[१] इन्द्र एवं उसके पुत्र कर्क्क सुवर्णवर्ष ने राष्ट्रकूट राज्य की स्थिति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान किए। कर्क्क सुवर्णवर्ष के भाई गोविन्द को, जिसने ८२७ ई. में कावी अभिलेख लिखवाया,[२] गुजरात की सामन्तीय गद्दी को हथिया लेने वाला कहा गया है[३], किन्तु, जैसा कि ए. एस. अल्तेकर का सुझाव है, वह कर्क्क सुवर्णवर्ष का अधीनस्थ शासक रहा और उसके हाथ शासन की बागडोर कभी नहीं आई।[४] कर्क्क सुवर्णवर्ष की मृत्यु के उपरान्त ध्रुव प्रथम लगभग ८३० ई. में गुजरात का शासक हुआ।[५] ध्रुव प्रथम 'वल्लभ' नामक शासक से युद्ध में व्यस्त था।[६] यह युद्ध तीन पीढ़ियों तक चलता रहा। ध्रुव प्रथम की मृत्यु 'वल्लभ' से हुए किसी एक युद्ध में हुई।[७] ध्रुव प्रथम के पुत्र अकालवर्ष शुभतुंग को अपने पिता का राज्य पुनः अर्जित करना पड़ा था।[८] उसकी यह विजय अनिर्णीतावस्था में ही थी क्योंकि उसके पुत्र ध्रुव द्वितीय को भी युद्ध जारी रखना पड़ा। ध्रुव द्वितीय को एक ओर गुर्जर शासक एवं दूसरी ओर वल्लभ से युद्ध करना पड़ रहा था, उसके सम्बन्धी उसका साथ नहीं दे रहे थे और उसका (अज्ञातनामा) छोटा भाई कुचक्र रच रहा था जैसा कि बगुमरा अभिलेख से ज्ञात होता है।[९] उल्लिखित गुर्जर शत्रु को भोज प्रथम से पहचाना जा सकता है जो इस समय बहुतेरे युद्धों में व्यस्त था।[१०] 'वल्लभ' उपाधिधारी शत्रु, जी. ब्यूलर के अनुसार, राष्ट्रकूट वंश का होना चाहिए। सम्भवतः अमोघवर्ष प्रथम स्वयं अथवा उसका कोई राष्ट्रकूट सामन्त इस युद्ध में भाग ले रहा था।[११] कृष्ण द्वितीय के कापडवंज अभिलेख से, भगवानलाल इन्द्रजी के अनुसार, बम्बई एवं कैम्बे के बीच के भाग पर अमोघवर्ष प्रथम के आक्रमण का संकेत मिलता है।[१२] उनके अनुसार

यह आक्रमण गुजरात के राष्ट्रकूटों से हुए युद्ध से सम्बन्धित है।[१३] अमोघवर्ष प्रथम ने वल्लभान्त कई एक उपाधियाँ धारण की थीं।[१४] ध्रुव द्वितीय के बगुमरा[१५] एवं दन्तिवर्मा के गुजरात[१६] अभिलेखों में उल्लिखित 'वल्लभ' नामक शत्रु को समकालिक होने के कारण अमोघवर्ष प्रथम से ही पहचाना गया है। कोन्नूर अभिलेख से अमोघवर्ष प्रथम के अन्तिम दिनों में सामन्तों द्वारा उपद्रव किए जाने की बात ज्ञात होती है जो बङ्केय द्वारा दबाए गए थे।[१७] इन तथ्यों के आधार पर यह मत व्यक्त किया गया कि गुजरात शाखा के शासक अमोघवर्ष प्रथम के विरोधी हो गए थे।[१८] किन्तु यह पहचान मुख्य रूप से 'वल्लभ' उपाधि के आधार पर की गई। गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों का मूल शाखा को दिए गए महत्वपूर्ण योगदानों, ध्रुव प्रथम के बड़ोदा अभिलेख के अनुसार ८३५ ई. तक गुजरात शाखा एवं अमोघवर्ष प्रथम के गोविन्द तृतीय के काल जैसे ही सम्बन्ध[१९] तथा तरसादी अभिलेख के अनुसार ८४० ई. तक अमोघवर्ष प्रथम द्वारा गुजरात शाखा के शासकों की शासन-भूमि के दान दिए जाने[२०] को देखते हुए दोनों शाखाओं के बीच एकाएक कटुता उत्पन्न होने की बात बहुत ठीक नहीं जान पड़ती। इस सम्भावना की किंचित् पुष्टि परोक्ष ढंग से भी की जा सकती है। यदि 'वल्लभ' नामक शत्रु अमोघवर्ष प्रथम ही था तो उसे अस्पष्ट रूप में ही क्यों उल्लिखित किया गया जब कि गुजरात राष्ट्रकूटों के एकाधिक अभिलेखों में उसका स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है। अमोघवर्ष प्रथम का सीधा उल्लेख हमें बगुमरा अभिलेख में भी कक्र्क सुवर्णवर्ष के विवरणांश में प्राप्त होता है।[२१] यदि उनका शत्रु अमोघवर्ष प्रथम ही था तो वे उसे नाम लेकर स्पष्टरूप से उल्लिखित करने में न हिचकते। क्या इस बात की भी सम्भावना की जा सकती है कि 'वल्लभ' सम्भवतः कोई पश्चिम चालुक्य-वंशी[२२] सामन्त रहा हो जिसने अमोघवर्ष प्रथम के समय के उत्पन्न राजनीतिक संकटों से लाभ उठाने की कोशिशें की हो। पुलकेशी द्वितीय के ऐहोल अभिलेख से हमें ज्ञात होता है कि 'पृथिवीवल्लभ' चालुक्यों की राजकीय उपाधि थी।[२३] बगुमरा अभिलेख की सूचना के अनुसार ध्रुव द्वितीय ने गुर्जर नरेश[२४] एवं मिहिर[२५] नामक शत्रुओं को स्पष्ट ही पराजित किया था सम्भवतः 'वल्लभ' की पराजय उसके हाथों न हुई थी। 'वल्लभ' सम्भवतः जिसके साथ अमोघवर्ष प्रथम का एक पुत्र[२६] भी सहयोग कर रहा था, का स्पष्ट उल्लेख अमोघवर्ष प्रथम के कोन्नूर अभिलेख में भी प्राप्त है।[२७] 'वल्लभ' के छिट-फुट युद्धों (अन्य शासक सामन्तों तथा राष्ट्रकूट परिवार के लोगों को मिलाकर षडयन्त्र रचने के फलस्वरूप) के विशद एवं गम्भीर रूप धारण करने पर ध्रुव द्वितीय को राजकीय सेना की सहायता की आवश्यकता पड़ी होगी, जो बङ्केय के नेतृत्व में

आई। यही कारण जान पड़ता है जिससे बङ्केय को दक्षिण अभियान रोक कर वापस बुला लिया गया था।[२८] बङ्केय ने चालुक्य 'वल्लभ' एवं अमोघवर्ष प्रथम के पुत्र[२९] को और ध्रुव द्वितीय एवं उसके छोटे भाई गोविन्द ने गुर्जर भोज प्रथम तथा मिहिर[३०] को पराजित किया होगा। इस सन्दर्भ में ध्रुव द्वितीय का 'अकेले ही' (एकाकिनैव) गुर्जर शक्ति को पराजित करने का उल्लेख महत्वपूर्ण है।[३१] सम्भवतः इसी समय मालवा पर राष्ट्रकूटों का अधिकार हुआ जिसका उल्लेख अमोघवर्ष प्रथम के अधीन क्षेत्र के रूप में उसके सिरूर अभिलेख में हुआ है।[३२]

उपर्युक्त सम्भावनाओं के आधार पर अमोघवर्ष प्रथम के काल के गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों के विद्रोह एवं स्वतन्त्र शासन के मत को सुधारने की आवश्यकता जान पड़ती है।

उपर्युक्त विवरणों से यह ज्ञात होता है कि गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों ने अपना पूरा-पूरा सहयोग अमोघवर्ष प्रथम के शासन को मजबूत करने एवं राष्ट्रकूट राज्य की सुरक्षा के लिए प्रदान किया।

कोन्नूर एवं बगुमरा अभिलेखों से ज्ञात होने वाले गम्भीर उपद्रव को कोन्नूर अभिलेख की तिथि ८६० ई. के पूर्व हुआ माना जाना चाहिए। इस गम्भीर उपद्रव को शान्त करने में गुजरात शाखा के ध्रुव द्वितीय एवं वनवासी के शासक बङ्केय ने प्रमुख भूमिकाएँ निभायीं।

कोन्नूर अभिलेख में प्राप्त विवरणों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि इस उपद्रव को शमित करने में बङ्केय ने जो पराक्रम प्रदर्शित किया उससे अमोघवर्ष प्रथम अत्यधिक प्रभावित था।[३३]

❖

पादटिप्पणी

१. द्रष्टव्य, ए. एस. अल्तेकर, **दि राष्ट्रकूट एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ६२, ६६।
२. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग ५, पृष्ठ १४४ एवं आगे।
३. **वही**, पृष्ठ १४७, श्लोक ३२ के आधार पर।
४. **दि राष्ट्रकूट एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ८० – ८१।
५. **वही**, पृष्ठ ८१।
६. बगुमरा अभिलेख, **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ १८३ – ८४, श्लोक ३२।
रणशिरसि खड्गघातैर्व्वल्लभ पराङ्मुखीकृत्य {।}
शस्त्रशतशुद्धदेहः स्वर्ग्गमगादेक एवासौ ।।
७. **वही**।
८. **वही**, पृष्ठ १८४, श्लोक ३४।
९. वल्लभदंडाक्रांतं विघटितदुष्टानुजीविवर्ग्गेण ।
पितृर्यागतमचिरान्मंडलमध्यासितं येन ।।
१०. **वही**, भाग १२, पृष्ठ १८४, श्लोक ३७।
इतोभिमुखमातत्प्रवल गूर्जराणां वलं ।
इतो विमुखवल्लभो विकृतिमागता बान्धवाः ।।
इतोनुजविकुर्व्वितं शममगात्समस्तं भयाद्–
अहो स्फुरणमद्भुतं निरुपेन्द्र खड्गस्य ते ।।
११. द्रष्टव्य, बी. एन. पुरी, **दि हिस्ट्री ऑफ दि गुर्जर–प्रतिहारज**, बम्बई, १९५७, पृष्ठ ६०–६१।
१२. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ १७९ । इसी मत का अनुसरण आर. जी. भण्डारकर एवं ए. एस. अल्तेकर ने किया है (द्रष्टव्य, **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी**, भाग १८, पृष्ठ २५६; **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ८२)।
१३. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग १, पृष्ठ ५४, श्लोक ६ (उपर्युद्धृत) के आधार पर। द्रष्टव्य, **बाम्बे गजेटियर**, भाग १, खण्ड १, पृष्ठ १२६।
१४. **वही**।

१५. द्रष्टव्य, अमोघवर्ष प्रथम का सिंहासनारोहण' पूर्वांश, अध्याय ३, अन्तिम अनुच्छेद, पृष्ठ २४।

१६. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ १८४, श्लोक ३७ (उपर्युद्धृत)।

१७. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग ६, पृष्ठ २६१, श्लोक ३२, ३४, ३७।

१८. **वही**, पृष्ठ ३०–३१, श्लोक २१–३१।

१९. द्रष्टव्य, जी. ब्युलर, **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ १८०, ए. एस. अल्तेकर, **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ८४।

२०. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १४, पृष्ठ १९६ एवं आगे। अमोघवर्ष प्रथम का उल्लेख, पृष्ठ १९९, श्लोक ७ में।

२१. **जर्नल ऑफ दि ओरियन्टल इंस्टीच्यूट, बड़ौदा**, भाग २०, संख्या २, पृष्ठ १५७।

२२. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ १८३, श्लोक २९।
.... योमोघवर्ष इति राज्यपदे व्यधत्त।

२३. गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों से हुए उसके युद्धों को ध्यान में रखते हुए उसके पूर्वी चालुक्य वंशी होने की सम्भावना नहीं की जा सकती।

२४. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग ६, पृष्ठ ४, श्लोक ४।
पृथिवीवल्लभशब्दो येषामन्वर्थताञ्चिरजातः {।}
तद्वंशेषु जिगीषुषु तेषु बहुश्वन्यतीतेषतु {।}

२५. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ १८४, श्लोक ३८।
गूर्जरबलमतिबलवत् समुद्यमं बृंहितं व कुल्येन ।
एकाकिनैव विहितं पराङ्मुख लीलया येन ।।

२६. **वही**, पृष्ठ १८४, श्लोक ४१।

२७. ए. एस. अल्तेकर ने इसे कृष्ण द्वितीय माना है (**दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ७९)। सम्भवतः उनका यह मत उनकी इस मान्यता पर आधारित था कि कृष्ण द्वितीय अमोघवर्ष प्रथम का एक मात्र पुत्र था (**वही**, पृष्ठ ८७)। किन्तु प्राप्त प्रमाणों के आधार पर कृष्ण द्वितीय का सीधे नामोल्लेख सम्भव नहीं है। अमोघवर्ष प्रथम के कृष्ण द्वितीय नाम के अतिरिक्त और भी पुत्र रहे जान पड़ते हैं। कम से कम एक के बारे में, जिसका नाम दुद्दय्य था, हमें एक अभिलेख से जानकारी प्राप्त होती है

(द्रष्टव्य, जे. मार्शल, **एनुअल रिपोर्ट ऑफ दि डायरेक्टर ऑफ आर्क्योलाजी इन इण्डिया**, १९१९–२०, पृष्ठ ३४)।

२८. इस सन्दर्भ में अभिलेख के २९–३१वें श्लोक (**एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग ६, पृष्ठ ३१) महत्वपूर्ण हैं। २९वें श्लोक में राज्य में उठ खड़े हुए उपद्रव के कारण बङ्केय के दक्षिण अभियान से वापस चले आने की अमोघवर्ष प्रथम की आज्ञा (भेजी हुई सूचना, **वही**, श्लोक २८, उपर्युद्धृत) पाने पर बङ्केय द्वारा की गई प्रतिज्ञा एवं वापस आने का विवरण दिया गया है।

अप्राप्ते वल्लभेन्द्र मयि जयति यदा विद्विषः स्यान्तदाहं
सन्यस्ताशेषसंगो मुनिरथ विधिना विद्विषां स्याज्जयश्रीः {।}
तत्राप्यु {द्दा} मधूमध्वजविततशिखासूत्पतामि प्रतापा –
दित्यारूढ़प्रतिज्ञाः कतिपय दिवसैः प्रापदस्मत्ससमीपं ।।

एफ. कीलहार्न ने इस श्लोक के प्रथम चरण में 'वल्लभेन्द्र' पद को 'वल्लभेन्द्रो' के रूप में सुधाकर (**वही**) यह माना है कि बङ्केय ने दो प्रतिज्ञायें कीं –

१. यदि मेरे पहुँचने के पूर्व ही (अप्राप्ते मयि) वल्लभेन्द्र (अमोघवर्ष प्रथम) शत्रुओं को विजित कर लेते हैं (वल्लभेन्द्रोजयति विद्विषः) तो मैं मुनियों की भाँति संसार को त्याग दूंगा; और

२. यदि भाग्यवश विजयश्री शत्रुओं को प्राप्त होती है तो मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊँगा (**वही**, पृष्ठ ३६, अनुवाद)। ऐसी प्रतिज्ञायें कर वह कुछ ही दिनों में अमोघवर्ष प्रथम के पास पहुँचा। इस समय उसने तीन मास के भीतर शत्रुओं को विजित करने की पुनः प्रतिज्ञा की (**वही**, पृष्ठ ३१, श्लोक १०)।

इन प्रतिज्ञाओं में प्रथम के सम्बन्ध में कुछ विचार आवश्यक है। पहली बात तो यह कि 'वल्लभेन्द्रे' पद के बिना सुधारे भी श्लोक का उचित अर्थ निकलता है। अतः अभिलेख के मूल पाठ को बदलकर अर्थ करना ठीक नहीं जान पड़ता। सन्दर्भित पद के मूल रूप में ही रहने पर बङ्केय की प्रथम प्रतिज्ञा यह थी – मेरे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने (मयि जयति विद्विषः) (किन्तु) वल्लभेन्द्र की अप्राप्ति में (अप्राप्ते वल्लभेन्द्रे अर्थात् यदि वह बन्दी नहीं बनाया जा सका तो) मैं मुनि की भाँति सभी सम्बन्धों को त्याग कर संन्यस्त हो जाऊँगा। यह प्रतिज्ञा बङ्केय की दूसरी प्रतिज्ञा के सन्दर्भ में अधिक उचित जान पड़ती है। पहली प्रतिज्ञा में शत्रुओं पर विजय और दूसरी में शत्रुओं के विजय की स्थितियों की

बात कही गई है। विजय प्राप्ति के साथ ही एक दूसरा भी लक्ष्य था, वल्लभेन्द्र की प्राप्ति (अर्थात् उसे बन्दी बनाने का)। इस दूसरे लक्ष्य की अप्राप्ति में अपेक्षया गुरुतर प्रतिज्ञा करता है कि वह अग्नि को समर्पित हो जायेगा (विधिना विद्विषां स्याज्जयश्रीः तत्रा प्युद्दामधूमध्वजवितत शिखासूत्पतामि)। ३१वें श्लोक के अन्तिम चरण से यह ज्ञात होता है कि बङ्केय ने अपनी सभी प्रतिज्ञायें पूरी कीं (तीर्ण्णप्रतिज्ञोभवत्, **वही**)। तीसरे चरण के अन्तिम एवं चौथे चरण के प्रथम भाग से ज्ञात होता है कि उसने प्रतिज्ञापूर्ति के लिए तीन कार्य किए –

(१) नृपतियों को जीता (२) बन्दी बनाया एवं (३) शत्रुओं की हत्या की (नृपतीन्निर्जित्य यो जित्विरो बन्दीकृत्य रिपून्निहत्य च तदा तीर्ण्णप्रतिज्ञोभवत्, **वही**)।

प्रतिज्ञा पूर्ति के लिए बङ्केय के इन कृत्यों को उसकी प्रतिज्ञाओं से सीधे सम्बन्धित किया जा सकता है। उसने शत्रुओं की हत्या कर वल्लभेन्द्र को बन्दी बना कर विरोधी नृपतियों का दमन किया।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बङ्केय को वल्लभ नामक शासक के विद्रोह की सूचना दी गई थी जिसके साथ कई अन्य शासक तथा अमोघवर्ष प्रथम का एक अज्ञातनामा पुत्र भी था जिसका सांकेतिक विवरण बङ्केय की प्रतिज्ञाओं एवं उसकी उपलब्धियों के वर्णन में प्राप्त होता है (**वही**, श्लोक २६ एवं ३१)।

कोन्नूर अभिलेख चूँकि बङ्केय की प्रार्थना पर अमोघवर्ष प्रथम द्वारा किए गए दान के विवरण से सम्बन्धित है अतः उसमें बङ्केय की उपलब्धियों की चर्चा की गई है। किन्तु इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि उठ खड़े हुए उपद्रव को शान्त करने में राज्य के अन्य सामन्तों का सहयोग भी प्राप्त किया गया होगा। कोन्नूर अभिलेख के ३१वें श्लोक से स्पष्ट है कि इस उपद्रव में एकाधिक शासक एवं अमोघवर्ष प्रथम का एक पुत्र भी शामिल था (.... परप्रेषिते याते मत्तनये स्थितान्यनृपतीन्निर्जित्य .... **वही**)। इस विवरण के पूरक के रूप में ध्रुव द्वितीय के बगुमरा अभिलेख से प्राप्त सूचनाओं को लिया जा सकता है। इस अभिलेख के ३७वें श्लोक में गुर्जर, वल्लभ, बान्धवों एवं एक अज्ञातनामा अनुज के विरोधी हो जाने की बात कही गई है (**इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १२, पृष्ठ १८४, उपर्युल्लिखित)। ४१वें श्लोक में मिहिर नामक शत्रु की भी चर्चा की गई है (**वही**)। इस अभिलेख के विरोधी वल्लभ एवं बान्धवों को कोन्नूर अभिलेख में उल्लिखित वल्लभेन्द्र तथा

अमोघवर्ष प्रथम के पुत्र (जो ध्रुव द्वितीय का चाचा लगेगा) से सम्बन्धित किया जा सकता है। यह तथ्य भी ध्यानाकर्षक है कि जहाँ गुर्जर एवं मिहिर के ध्रुव द्वितीय द्वारा पराजित होने का स्पष्ट उल्लेख बगुमरा अभिलेख में प्राप्त होता है (**वही**, श्लोक ३८–४१) वहाँ, वल्लभ, बान्धवों एवं अनुज के पराजित किये जाने की बात नहीं कही गई है। सम्भवतः इस कारण कि वल्लभ को बङ्केय ने पराजित किया था।

२८. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग ६, पृष्ठ ३१, श्लोक २८ (उपर्युद्धृत)।

२९. **वही**, श्लोक २९–३१।

३०. ध्रुव द्वितीय के शत्रुओं को पराजित करने में गोविन्द के सहयोग की चर्चा बगुमरा अभिलेख में प्राप्त होती है (**इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ १८६, श्लोक ५८–६)।

३१. **वही**, पृष्ठ १८४, श्लोक ३८ (उपर्युद्धृत)।

३२. **वही**, पृष्ठ २१८, पंक्ति ६ (उपर्युद्धृत)।

३३. बङ्केय की प्रशंसा से सम्बन्धित अंश के लिए द्रष्टव्य, **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग ६, पृष्ठ ३०, श्लोक २१ एवं आगे।

❖

अध्याय ६

अमोघवर्ष प्रथम के शीलाहार सामन्त

६

अमोघवर्ष प्रथम के शीलाहार सामन्त

कृष्ण प्रथम ने कोंकण में शीलाहारों को शासक नियुक्त किया था।[1] अमोघवर्ष प्रथम के काल में शीलाहार सामन्त किसी प्रकार का विद्रोह करते ज्ञात नहीं होते। अमोघवर्ष प्रथम के काल में पुल्लशक्ति एवं उसके पुत्र कपर्दी ने शासन किया जैसा कि काण्हेरी अभिलेखों से ज्ञात होता है।[2]

❖

पादटिप्पणी

१. द्रष्टव्य, ए. एस. अल्तेकर, **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स,** पृष्ठ ४५।

२. **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १३, पृष्ठ १३३ एवं आगे।

❖

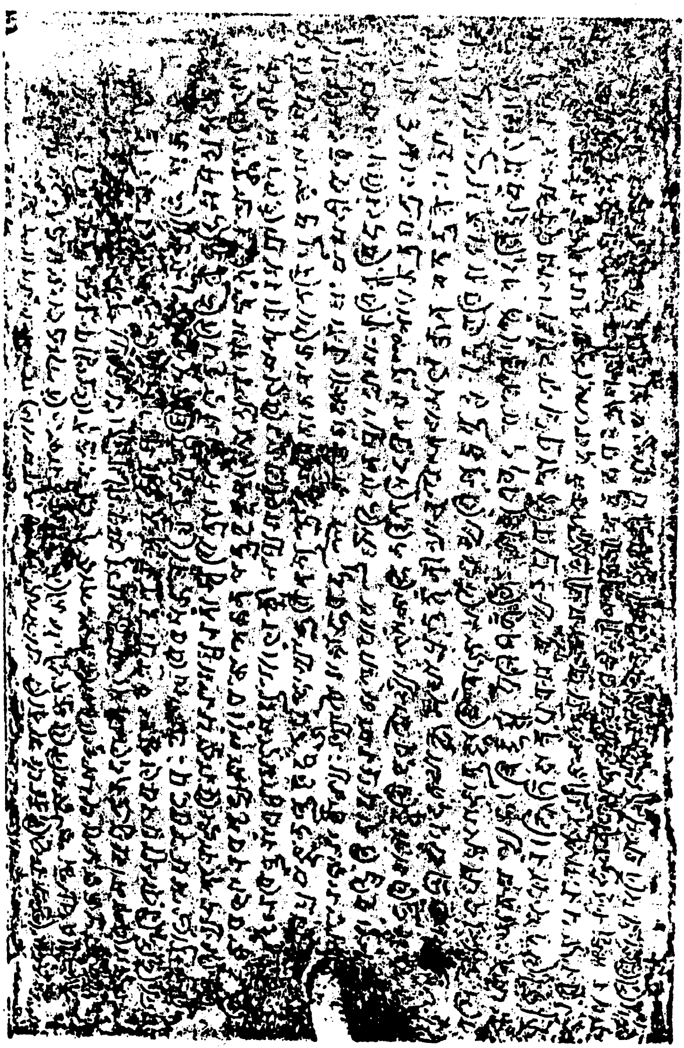

वरसाडी अभिलेख की एक ताम्र पट्टिका

अध्याय १०

अमोघवर्ष प्रथम के समय का पाल-राष्ट्रकूट संघर्ष

१०

अमोघवर्ष प्रथम के समय का पाल-राष्ट्रकूट संघर्ष

अमोघवर्ष प्रथम के सिरूर अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि अङ्ग, वङ्ग, मगध, मालव एवं वेङ्गी के क्षेत्र उसके प्रभाव में थे।[१] अङ्ग, वङ्ग एवं मगध का क्षेत्र पाल शासन में था। ए. एस. अल्तेकर के अनुसार अमोघवर्ष ने वेङ्गी विजय के बाद उड़ीसा होते हुए पाल राज्य पर आक्रमण किया होगा।[२] यह आक्रमण पाल शासक की शक्ति के उत्थान को ध्यान में रखते हुए लगभग ८३० ई. के उपरान्त[३] एवं सिरूर अभिलेख की तिथि ८६६ ई. के पूर्व हुआ होगा। कुछ पाल अभिलेखों में देवपाल द्वारा एक द्राविड़ शासक के परास्त होने का उल्लेख है। इस द्राविड़ शासक को अमोघवर्ष प्रथम से पहचाना गया है।[४] गोविन्द तृतीय की विजयों एवं अमोघवर्ष प्रथम की प्रारम्भिक कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए इस बात की सम्भावना की जा सकती है कि पहले पालों ने राष्ट्रकूटों पर आक्रमण किया हो और कुछ सफलता भी प्राप्त की हो। इस आक्रमण के उत्तर में ही अमोघवर्ष प्रथम ने आक्रमण किया होगा जिसमें वह सफल रहा जैसा कि सिरूर अभिलेख के आधार पर माना जा सकता है। किन्तु एक दूसरी सम्भावना भी असंगत नहीं जान पड़ती कि राष्ट्रकूटों और पालों के बीच की यह घटना एक छोटी घटना थी और सम्भवतः युद्ध अनिर्णीत रहा जिसके कारण दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी विजय की बात कही है।[५] ऐसी स्थिति में अमोघवर्ष प्रथम के पाल शत्रु को उसका समकालिक शासक देवपाल ही माना जा सकता है किन्तु यदि दोनों घटनाओं को अलग-अलग समय का माना जाय और इस बात की सम्भावना की जाय कि ८६६ ई. में सिरूर अभिलेख के लिखवाये जाने के कुछ एक वर्ष पूर्व अमोघवर्ष प्रथम पालों पर आक्रमण किए रहा होगा तो प्रारम्भ में देवपाल द्वारा उसके पराजित होने तथा नारायणपाल के समय में उसके विजयी होने की बात कही जा सकती है। यदि, जैसा कि आर. सी. मजुमदार ने सुझाया है, द्राविड़ शासक को पाण्ड्य श्रीमार श्रीवल्लभ से पहचाना जाये[६] तो अमोघवर्ष प्रथम के देवपाल द्वारा पराजित होने की बात समाप्त हो जाती है। जहाँ तक पालों पर उसकी विजय का सम्बन्ध है, अङ्ग, वङ्ग, एवं मगध की विजय की निश्चित तिथि ज्ञात न होने के कारण, देवपाल अथवा नारायणपाल दोनों में से

किसी से सम्बन्धित किया जा सकता है। ८६६ ई. के अभिलेख में किए गए उल्लेख के कारण राष्ट्रकूटों की विजय नारायणपाल के काल में होने की अधिक सम्भावना जान पड़ती है।

❖

पादटिप्पणी

१. **इण्डियन एण्टक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ २१८, पंक्ति ६ (उपर्युद्धृत)।
२. ए. एस. अल्तेकर, **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ७७।
३. **वही**, पृष्ठ ७७, पादटिप्पणी १६। ए. एस. अल्तेकर ने इस घटना को नारायणपाल के समय में माना है।
४. द्रष्टव्य, आर. सी. मजुमदार, **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज**, पृष्ठ ५१।
५. **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ७८।
६. **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज**, पृष्ठ ५१।

❖

अध्याय ११

अमोघवर्ष प्रथम का राज्य विस्तार

११

अमोघवर्ष प्रथम का राज्य विस्तार

लगभग ८६० ई. तक अमोघवर्ष प्रथम अपनी राजनीतिक परेशानियों को पार कर चुका था। इस समय से लेकर सम्भवत: अपने जीवन के अन्त तक उसके दक्षिण में *गङ्गवाडि* को छोड़कर दक्कन के सम्पूर्ण क्षेत्र पर राज्य किया। उसके सिरूर *अभिलेख* से यह ज्ञात होता है कि अङ्ग, वङ्ग, मगध, मालव एवं वेङ्गी के क्षेत्र या तो उसके अधिकार में थे अथवा उन पर उसका राजनीतिक दृष्टि से प्रभाव था (द्रष्टव्य, ***मानचित्र,*** अमोघवर्ष प्रथम का राज्य विस्तार)।

❖

संजान अभिलेख की ताम्र मुद्रा

अध्याय १२

अमोघवर्ष प्रथम का शासन से सन्यास का प्रश्न

१२

अमोघवर्ष प्रथम का शासन से सन्यास का प्रश्न

प्रश्नोत्तरमालिका (या **रत्नमालिका**) के अन्तिम श्लोक से ऐसा प्रतीत होता है कि उसके लेखक अमोघवर्ष ने सन्यास ले लिया था।[१] अमोघवर्ष प्रथम के सम्बन्ध में यह सूचना बहुत निश्चित नहीं कही जा सकती क्योंकि इस ग्रन्थ के *रचयिता* के रूप में अमोघवर्ष के अतिरिक्त शंकराचार्य एवं विमल का नाम भी आता है।[२] हमें सञ्जान अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि अमोघवर्ष प्रथम एक बार से अधिक राज्य-शासन से निवृत्त हुआ था।[३] डी. आर. भण्डारकर ने अभिलेख के इस कथन को शासक के समय-समय पर धर्म-कार्य में रत होने के लिए शासन से कुछ समय के लिए विरत होने से सम्बन्धित किया है।[४] किन्तु इस सूचना को प्रारम्भिक सामन्तीय उपद्रव एवं वेङ्गिराज के आक्रमण के फलस्वरूप हुई स्थिति को सम्मानजनक एवं साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया हुआ भी माना जा सकता है। इतिहासकारों ने माना है कि अमोघवर्ष प्रथम अपने जीवन के अन्तिम दिनों में शासनभार कृष्ण द्वितीय को सौंप कर स्वयं धर्म-कार्य में लगा था। इस सम्बन्ध में पृथ्वीराम के ८७५ ई. के सौन्दत्ती अभिलेख में कृष्ण द्वितीय के शासक के रूप में उल्लिखित होने[५] एवं ८७७-७८ ई. के कण्हेरी अभिलेख में अमोघवर्ष प्रथम के शासन के उल्लेख[६] की बातें महत्वपूर्ण हैं। शासक के रूप में नामोल्लेख के व्यतिक्रम का कारण ए. एस. अल्तेकर ने अमोघवर्ष प्रथम द्वारा शासन से सन्यास लेना माना है।[७] कृष्ण द्वितीय के सम्बन्ध में इस बात की भी सम्भावना की जा सकती है कि गुजरात शाखा के राष्ट्रकूट शासक की भाँति ही राज्य का एक अंश उसके शासन में रखा गया रहा हो और पृथ्वीराम उसका अधीन सामन्त रहा हो।[८] ८७४-७५ ई. में अमोघवर्ष प्रथम के शासन का प्रमाण हमें निडगुण्डि अभिलेख से प्राप्त होता है। इस प्रकार अमोघवर्ष प्रथम द्वारा शासन त्याग कर सन्यस्त जीवन व्यतीत करने की बात बहुत स्पष्ट रूप से नहीं कही जा सकती।

❖

पादटिप्पणी

१. **प्रश्नोत्तरमालिका**, श्लोक ३०।
विवेकात्त्यक्ताराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका।
रचित अमोघवर्षेण धिया सदलंकृतिः।।
(द्रष्टव्य, **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १८, पृष्ठ २१८)

२. द्रष्टव्य, **वही**, भाग ३३, पृष्ठ १६८ – ६६।

३. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग १८, पृष्ठ २४८, श्लोक ४८।
येनात्याजि तनु(ः) स्वराज्यमस्कृद्व(द्वा)ह्यार्त्थकैः का कथा।

४. **वही**, पृष्ठ २४२।

५. **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी** भाग १०, पृष्ठ २००।

६. **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १३, पृष्ठ १३५।

७. **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ८६।

८. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग ७, पृष्ठ २०८ एवं आगे।

❖

अध्याय १३

अमोघवर्ष प्रथम के शासन-काल का अन्तिम वर्ष तथा उसके सम्पूर्ण शासन-काल पर विमर्श

१३

अमोघवर्ष प्रथम के शासन–काल का अन्तिम वर्ष तथा उसके सम्पूर्ण शासन–काल पर विमर्श

शक सम्वत् ७९९ (८७७-७८ ई.) अमोघवर्ष प्रथम के शासन-काल का ज्ञात अन्तिम वर्ष है। इसी वर्ष कण्हेरी का एक अभिलेख लिखवाया गया जिसमें उसके शासन का उल्लेख किया गया है।[१]

सिरूर अभिलेख की सूचना के आधार पर गणना करने पर यह ज्ञात होता है कि अमोघवर्ष प्रथम का शासन लगभग ८१४ ई. में प्रारम्भ हुआ।[२] उसके शासन-काल का ज्ञात अन्तिम वर्ष ८७८ ई. है। इस प्रकार अमोघवर्ष प्रथम ने स्पष्ट ही ६४-६५ वर्षों तक राज्य किया। आर. जी. भण्डारकर ने इतने लम्बे शासन-काल पर सन्देह प्रकट किया था।[३] किन्तु सञ्जान अभिलेख के अनुसार अमोघवर्ष प्रथम शासन प्रारम्भ के समय अभी १३-१४ वर्ष का किशोर ही था[४] और इस प्रकार उसके दीर्घ शासन-काल पर आपत्ति की गुंजाइश नहीं दिखती।[५] ऐसा जान पड़ता कि अमोघवर्ष प्रथम का शासन ६४-६५ वर्षों से कुछ अधिक ही काल का था। यह सम्भावना अमोघवर्ष प्रथम के पुत्र कृष्ण द्वितीय की प्रारम्भिक तिथि ८८८ ई. पर आधारित है। अमोघवर्ष प्रथम की मृत्यु इस प्रकार ८७८-८८ ई.[६] के बीच ही कभी हुई होगी। ए. एस. अल्तेकर ने इस घटना को लगभग ८७८ ई. के आस-पास ही मानते हुए ८८० ई. सम्भावित की थी।[७] बाद में उन्होंने इस घटना को लगभग ८७८ ई. में ही माना है।[८] किन्तु कृष्ण द्वितीय के शासन के प्रारम्भ की तिथि के निश्चित ज्ञान के बिना अमोघवर्ष प्रथम की मृत्यु की तिथि ठीक-ठीक नहीं अनुमानित की जा सकती। यदि कृष्ण द्वितीय के शासन प्रारम्भ की तिथि ८८८ ई. के आस-पास ही मानी जाये तो अमोघवर्ष प्रथम का शासनकाल ८-१० वर्ष और बढ़ जायेगा। निःसन्देह उसने दीर्घ जीवन प्राप्त किया था और दीर्घकालिक शासन भी किया था।

❖

पादटिप्पणी

१. **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १३, पृष्ठ १३५। सी. आर. कृष्णचार्लु एवं अन्य तथा ए. एस. अल्तेकर ने अमोघवर्ष प्रथम के शासन–काल का ज्ञात अन्तिम वर्ष ८७८ ई. वीरसेन की **जयधवला टीका** की रचना–परिसमाप्ति की तिथि शक सम्वत् ७९९ फाल्गुन, शुक्ल १० के आधार पर माना है। (**साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शंस,** भाग ११, खण्ड १, प्रस्तावना, पृष्ठ ५; **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स,** पृष्ठ ८७) जो उचित नहीं है। **जयधवला टीका** की परिसमाप्ति शक सम्वत् ७५९ (८३७ ई.) में हुई थी –

फाल्गुने मासि पूर्वाण्हे दशम्यां शुक्लपक्षके।
प्रवर्धमानपूजोरुनन्दीश्वरमहोत्सवे।।

....

एकान्तषष्टिसमाधिकसप्तशताब्देषु शकनरेन्द्रस्य।
समतीतेषु समाप्ता जयधवला प्राभृत व्याख्या।।

(पत्रावली संस्करण, बम्बई, पृष्ठ २२९९, प्रशस्ति, श्लोक ७, ११। **कसायपाहुड,** जयधवला टीका सहित, फूलचन्द एवं अन्य सम्पादित, मथुरा, १९४४, भाग १, प्रस्तावना, पृष्ठ ७२ भी द्रष्टव्य)

२. द्रष्टव्य, 'गोविन्द तृतीय की मृत्यु', पूर्वांश, **अध्याय** २, पृष्ठ **१६**।

३. **दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि डेकन,** कलकत्ता, १९५७, पृष्ठ १६४ – ६५।

४. द्रष्टव्य, 'अमोघवर्ष प्रथम का सिंहानसनारोहण', पूर्वांश, **अध्याय** ३, पृष्ठ **२३**।

५. ए. एस. अल्तेकर, **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स,** पृष्ठ ८७, पाद टिप्पणी ४६।

६. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १३, पृष्ठ १८६, पंक्ति २–३ (रविवार, २१ अप्रैल, ८८८ ई.)। ए. एस. अल्तेकर ने एक स्थान पर कृष्ण द्वितीय की ज्ञात प्रारम्भिकतम तिथि ८८३ ई. दी है (**दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि डेकन,** जी. याजदानी सम्पादित, लन्दन, १९६०, पृष्ठ २८०) सम्भवतः यह गलत छपाई का परिणाम है।

७. **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स,** पृष्ठ ८७; **दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि डेकन,** जी. याजदानी सम्पादित, पृष्ठ २८०।

८. **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज,** पृष्ठ ११।

❖

अध्याय १४

अमोघवर्ष प्रथम के व्यक्तित्व का मूल्यांकन योद्धा एवं कला और साहित्य का संरक्षक

१४

अमोघवर्ष प्रथम के व्यक्तित्व का मूल्यांकन : योद्धा एवं कला और साहित्य का संरक्षक

अमोघवर्ष प्रथम के सम्बन्ध में कहा गया है कि यद्यपि उसका शासन दीर्घकालिक था किन्तु युद्ध एवं विजयों आदि की दृष्टि से महत्वपूर्ण न था। उसके शासन-काल में सामन्तों एवं पड़ोसी राज्यों का विरोध एवं उपद्रव होता रहा तथा जो राज्य स्वतन्त्र हो गए थे वे पुनः राष्ट्रकूट शासन में नहीं लाए जा सके। इस प्रकार अमोघवर्ष प्रथम को युद्धों से विरत माना गया है।[1] इसमें सन्देह नहीं अमोघवर्ष प्रथम अपने पिता गोविन्द तृतीय जैसा योद्धा नहीं था, किन्तु वह युद्धों से बिल्कुल विरत भी नहीं था। चालुक्यों, पालों तथा गुर्जरों से हुए युद्ध उल्लेख्य हैं। अमोघवर्ष प्रथम के समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उसके व्यक्तित्व के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है।

योद्धा

अमोघवर्ष प्रथम अभी किशोर ही था जब राजसत्ता उसके हाथों में सौंप दी गई थी। गोविन्द तृतीय द्वारा पराभूत किए गए एवं उससे असन्तुष्ट राज्याधिकारियों, सामन्तों एवं पड़ोसियों ने अमोघवर्ष प्रथम की प्रशासनिक अज्ञता का लाभ उठा लेना चाहा। इस समय राष्ट्रकूट शासन की जो स्थिति ज्ञात होती है उसमें चाहे कर्क्क सुवर्णवर्ष के प्रयत्नों से ही, अमोघवर्ष प्रथम का शासन पर अधिकार प्राप्त करना बड़े ही महत्व का विषय है। उसके शासन की प्रारम्भिक दशाब्दि ऐसी ही परिस्थितियों से जूझते हुए बीती। इस प्रकार की परेशानियों को झेलते हुए वह युवावस्था को प्राप्त हुआ जो पूर्वी चालुक्यों एवं गङ्गों के दीर्घकालिक संघर्षों में बीती। लगभग १५ वर्षों के आपसी मनमुटावों को उसने अपनी राजनीतिक दूरदर्शिता के फलस्वरूप विभिन्न वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से दूर किया। इस प्रकार चालुक्यों पर उसका अधिकार बना रहा और गङ्ग उसके पूरे सहायक एवं मित्र रहे। उसने अपने राज्य के पश्चिम एवं उत्तर में उठ खड़े हुए पश्चिमी चालुक्यवंशी सामन्त (वल्लभ) एवं गुर्जर (भोज प्रथम) शत्रुओं को राष्ट्रकूट शक्ति की दृढ़ता का परिचय दिया। राष्ट्रकूट सेना ने अङ्ग, बङ्ग

एवं मगध तक धावा किया। उत्तर में राष्ट्रकूट सेना नर्मदा तक गई थी। इस प्रकार अमोघवर्ष प्रथम का शासन-काल सैनिक कार्यवाहियों से पूर्ण था। लगभग ६६० ई. तक वह विभिन्न युद्ध संचालनों से स्पष्ट ही संलग्न रहा जान पड़ता है। इस प्रकार अमोघवर्ष प्रथम युद्धों से विरत शासक नहीं माना जाना चाहिए। यह दूसरी बात है कि परिस्थितियों वश उसका अधिकांश समय अपने ही राज्य के उपद्रवों एवं शासन की रक्षा में लगा। इसके बावजूद उसने उत्तर एवं दक्षिण के विजय अभियानों की योजनायें भी कार्यान्वित की थीं। शाकटायन ने स्पष्ट ही उसे शत्रुओं का दहन करने वाला कहा है और यही बात कापडवञ्ज अभिलेख में भी कही गई है।[२]

धर्म, साहित्य एवं कला का संरक्षक

अमोघवर्ष प्रथम के व्यक्तित्व का आकर्षक पहलू उसका धर्म, साहित्य एवं कला का पुजारी तथा प्रजावत्सल होना है। अमोघवर्ष प्रथम के अन्तिम दो-तीन दशक शान्तिपूर्ण जान पड़ते हैं जिसका पूरा-पूरा उपयोग उसने अपने सांस्कृतिक एवं प्रजाहितार्थ कार्यों के लिए किया होगा।

धार्मिक एवं प्रजावत्सल

अमोघवर्ष प्रथम जैन मतावलम्बी था। स्याद्वाद सम्प्रदाय का अनुयायी[३] एवं जिनसेन का शिष्य था।[४] प्रजा के हित का वह ध्यान रखता था। सञ्जान अभिलेख में यह कहा गया है कि प्रजा पर आयी विपत्ति को दूर करने के लिए उसने जीमूतवाहन, शिबि एवं दधीचि की परम्परा में महालक्ष्मी की पूजा में अपनी एक उंगली ही अर्पित कर दी थी।[५] भट्टाकलङ्क ने अपने **शब्दानुशासन** में अमोघवर्ष प्रथम को बलि, जीमूतवाहन, दधचि एवं शिबि की तुलना में कई गुना श्रेष्ठ बताया है।[६]

साहित्यकार एवं साहित्य का संरक्षक

अमोघवर्ष प्रथम स्वयं **कविराजमार्ग** नामक ग्रन्थ का रचयिता था।[७] यह ग्रन्थ कन्नड़ भाषा का प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। इस शासक ने विभिन्न साहित्यकारों को प्रश्रय एवं संरक्षण भी प्रदान किया। नागवर्मा द्वितीय (११५० ई.), केशिराज (१२२५ ई.) एवं भट्टाकलङ्क (१६०० ई.) ने उसके

साहित्यकारों को प्रश्रय देने के गुण की प्रशंसा की है।[८] **आदिपुराण** के लेखक जिनसेन एवं गुणभद्र का वह संरक्षक था।[९] शाकटायन एवं वीरसेन ने अमोघवर्ष प्रथम के काल में ही क्रमशः **शाकटायनव्याकरण** की **अमोघवृत्ति**[१०] तथा गुणधर रचित **कसायपाहुड** की **जयधवलाटीका** लिखी।[११] इन दोनों ग्रन्थों के नाम अमोघवर्ष प्रथम के सम्मान में ही उसकी उपाधियों पर रखे गए हैं।[१२] इसी शासक के काल में महावीराचार्य ने अपने **गणितसारसंग्रह** नामक ग्रन्थ को पूरा किया।[१३]

कला संरक्षक

कला एवं स्थापत्य के संरक्षक के रूप में अमोघवर्ष प्रथम को हम एलोरा के **ब्राह्मण** एवं जैन लयणों के निर्माण के सन्दर्भ में देख सकते हैं। यहाँ के दशावतार नामक शैव लयण में अमोघवर्ष प्रथम का एक अभिलेख अंकित है।[१४] इस प्राप्ति के आधार पर दशावतार के निर्माण में अमोघवर्ष प्रथम के सहयोग की सम्भावना की जा सकती है। एलोरा के जैन लयणों का निर्माण लगभग ९वीं शताब्दी में हुआ था।[१५] यद्यपि हमें कोई स्पष्ट साक्ष्य नहीं प्राप्त है किन्तु अमोघवर्ष प्रथम का इन लयण-निर्माणों से असम्बद्ध होना सम्भव नहीं जान पड़ता।[१६]

चन्द्रगुप्त द्वितीय एवं अमोघवर्ष प्रथम की तुलना

सञ्जान अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि अमोघवर्ष प्रथम गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय की तुलना में अधिक गुरुतर चरित्र तथा दान देने वाला था।[१७] इन दोनों शासकों के व्यक्तित्व में काफी समानता देखी जा सकती है। दोनों ने ही राजनीतिक परेशानियों के साथ शासन प्रारम्भ किए और क्रमशः अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाकर विद्रोह का दमन एवं विजय अभियान किए। अमोघवर्ष प्रथम के प्रारम्भिक दिनों की परेशानियाँ कुछ भिन्न प्रकार की एवं अपेक्षतया गुरुतर थीं। दोनों ही शासक प्रजावत्सल एवं धार्मिक थे और साहित्य तथा कला के अभिवर्धक एवं संरक्षक थे। सञ्जान अभिलेख के रचयिता ने अमोघवर्ष प्रथम की तुलना में चन्द्रगुप्त द्वितीय को उचित ही प्रस्तुत किया है। राष्ट्रकूट शासक का गुरुतर व्यक्तित्व सदा ही मान्य रहा है। गुणधर रचित **कसायपाहुड** की वीरसेनकृत **जयधवला टीका** की प्रशस्ति में भी गुर्जरनरेन्द्र के रूप में अमोघवर्ष प्रथम की

कीर्ति को चन्द्रमा के समान स्वच्छ तथा उसके मध्य गुप्तनरेश की कीर्ति को मच्छर के समान कहा गया है।[६]

पादटिप्पणी

१. द्रष्टव्य, ए. एस. अल्तेकर, **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज**, पृष्ठ १० – ११; **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स**, पृष्ठ ८७, के. ए. नीलकान्त शास्त्री, **ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इण्डिया**, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, १९६६, पृष्ठ १६२।

२. अदहदमोघवर्षेऽरातीन, **शाकटायन व्याकरण** के सूत्र (ख्याते दृश्ये ४.३.२०. ८ के उदाहरण के रूप में उल्लिखित), द्रष्टव्य, **शाकटायनव्याकरण** अमोघवृत्ति टीका सहित, सं० शम्भूनाथ त्रिपाठी, वाराणसी, १९७१, पृष्ठ ४०८।

३. महावीर कृत, **गणितसारसंग्रह**, लक्ष्मीचन्द्र जैन सम्पादित, शोलापुर, १९६३, मंगलाचरण, पृष्ठ २, श्लोक ८।
विध्वस्तैकान्तपक्षस्य स्याद्वादन्यायवादिनः।
देवस्य नृपतुंगस्य वर्धतां तस्य शासनम्।।
एक अन्य सन्दर्भ में स्याद्वाद का उल्लेख अमोघवर्ष प्रथम के कोन्नूर अभिलेख में भी प्राप्त होता है (द्रष्टव्य, **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग ६, पृष्ठ ३७, श्लोक ४४)

४. जैसा कि गुणभद्र रचित **उत्तरपुराण** की प्रशस्ति से ज्ञात होता है –
यस्य प्रांशुनरवांशुजालविसरद्धारान्तराविर्भव –
त्पादम्भोजरजः पिशङ्गमुकुटप्रत्यग्ररत्नद्युतिः।
स श्रीमंजिनसेन पूज्य भगवत्पादो जगन्मङ्गलम्।।
(**उत्तरपुराण**, पन्नालाल जैन सम्पादित, वाराणसी, १९६८, पृष्ठ ५७४, श्लोक ६)

५. **एपिग्राफिया इण्डिका**, भाग १८, पृष्ठ २४८, श्लोक ४७।
सर्प्प पातुमसो(सौ) ददो(दौ) निजतनुं जीमूतकेतोस्सुतः
श्येनायाथ शिविः(बिः) कपोतपरिरक्षार्थं दधीचोर्त्थिने।
तेप्येकैकमतर्प्पयन्किल महालक्ष्म्यै स्वा(स्व) वामांगुलिं
लोकोपद्रवशान्तये स्म दिशति श्री वीरनारायणः।।

६. **कर्नाटकशब्दानुशासनम्**, बी. एल. राइस सम्पादित, बंगलौर, १८९०, पृष्ठ १९४; **इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग ३३, पृष्ठ १९८ भी द्रष्टव्य।

७. द्रष्टव्य, **कविराजमार्ग,** के. बी. पाठक सम्पादित, बंगलौर, १८६८; **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग २२, पृष्ठ ८१ एवं आगे। जे. एफ. फ्लीट ने इस ग्रन्थ को कवीश्वर द्वारा रचा गया माना था (**इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग ३३, पृष्ठ २५८ एवं आगे)।

८. **वही,** पृष्ठ १६७ एवं आगे।

६. द्रष्टव्य, के. बी. पाठक, **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग २२, पृष्ठ ८५। जिनसेन ने अमोघवर्ष प्रथम का उल्लेख अपने **पार्श्वाभ्युदय** ग्रन्थ (अन्तिम सर्ग, श्लोक ७०) में किया है।

..... भुवनभवतु देवः सर्वदामोघवर्षः।

१०. अदहदमोघवर्षोऽरातीन (सूत्र ख्याते दृश्ये ४.३.२०८ के उदाहरण के रूप में), **शाकटायन व्याकरण,** अमोघवृत्ति सहित, शम्भूनाथ त्रिपाठी सम्पादित, वाराणसी, १६७१, पृष्ठ ४०६। कृष्ण द्वितीय के कापडवञ्ज अभिलेख में अमोघवर्ष प्रथम के लिए प्रयोजित 'भूपालात्कंटिकाभि (कण्टकामान्) सपदि विघटितान्वेष्ट(ष्ठ)यित्वा ददाह, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १, पृष्ठ ५४, श्लोक ६ के आधार पर अमोघवर्ष को अमोघवर्ष प्रथम से पहचानना उचित ही है (द्रष्टव्य, **वही,** प्रस्तावना, पृष्ठ १२ – १३)।

११. पत्रावली संस्करण, बम्बई, प्रशस्ति, पृष्ठ २२६७, श्लोक ८, ११।
अमोघवर्ष राजेन्द्र राज्य प्राज्य गुणोदया।

....

एकान्नषष्टिसमधिक सप्तशताब्देषु शकनरेन्द्रस्य।
समतीतेषु समाप्ता जयधवला प्राभृत व्याख्या।।

१२. द्रष्टव्य, अम्बालाल. प्रे. शाह, **जैन साहित्य का बृहद इतिहास,** भाग ५, वाराणसी, १६६६, पृष्ठ १८; पन्नालाल जैन, **आदिपुराण,** काशी, १६६३, प्रस्तावना, पृष्ठ २६।

१३. मंगलाचरण, श्लोक ३, ८।
श्रीमतामोघवर्षेण येन स्वेष्टाहितैषिणा।।

....

देवस्य नृपतुङ्गस्य वर्धतां तस्य शासनम्।।

१४. **आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ वेस्टर्न इण्डिया,** भाग ५, पृष्ठ ८७ – ८६।

१५. पी. ब्राउन, **इण्डियन आर्किटेक्चर** (बुद्धिष्ट एण्ड हिन्दू पीरियड्स), बम्बई, १९५६, पृष्ठ ६०; ए. गोस्वामी एवं ओ. सी. गांगुली, **दि आर्ट ऑफ दि राष्ट्रकूटज,** कलकत्ता, १९५८, पृष्ठ २४ – २५।

१६. **वही।**

१७. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १८, श्लोक ४८।
हत्वा भ्रातरमेव राज्यमहरदेवीं च दीनस्ततो
लक्षं कोटिमलेखयनिक(त्कि)लं कलौ दाता स गुप्तान्वयः।
येनात्याजि तनु(:) स्वराज्यमसकृद्वा(द्बा)ह्यार्थकैः का कथा
ह्रीप्त(स्त)स्योन्नतिराष्ट्रकूठ(ट)तिलको दातेति कीर्त्याव(म)पि।।

१८. प्रशस्ति, पृष्ठ २२९७, श्लोक १२।
गूर्ज्जरनरेन्द्रकीर्तेरन्तः पतिता शशांक शुभ्राः।
गुप्तैव गुप्तनृपतेः शकस्य मशकायते कीर्त्तिः।।

प्रशस्ति में अमोघवर्ष प्रथम के उल्लेख (श्लोक ८), जो रचना समाप्ति–काल के आधार पर अमोघवर्ष प्रथम है (श्लोक ११); गुर्जरनरेन्द्र की अत्यन्त शुभ्र कीर्ति के वर्णन (श्लोक १२–१५), जो अमोघवर्ष प्रथम के 'अतिशयधवल' विरुद के आधार पर किया गया जान पड़ता है, को दृष्टि में रखते हुए गुर्जरनरेन्द्र को अमोघवर्ष प्रथम के रूप में पहचानना (द्रष्टव्य, फूलचन्द्र एवं अन्य, **कसायपाहुड,** जयधवला टीका सहित, मथुरा, १९४४, भाग १, प्रस्तावना, पृष्ठ ७३ – ७४) उचित ही जान पड़ता है।

❖

अध्याय १५

अमोघवर्ष प्रथम द्वारा जैन धर्म का संरक्षण एवं अन्य धर्मों के प्रति सद्भाव

१५

अमोघवर्ष प्रथम द्वारा जैन धर्म का संरक्षण एवं अन्य धर्मों के प्रति सद्भाव

जैन धर्म का संरक्षक

जैन मतावलम्बी अमोघवर्ष प्रथम के शासन-काल में जैन धर्म को पूर्ण संरक्षण प्राप्त था। अपने समय के जैन आचार्यों का उसने पूर्ण सम्मान एवं संरक्षण किया। आचार्य जिनसेन को उसने अपना गुरु माना था। जिनसेन के शिष्य गुणभद्र को उसने अपने पुत्र **कृष्ण** के गुरु के रूप में नियुक्त किया था। अमोघवर्ष प्रथम के काल में ही जिनसेन एवं गुणभद्रकृत **आदिपुराण,** गुणधरकृत **कसायपाहुड** की वीरसेनकृत **जयधवला टीका** एवं शाकटायन द्वारा अपने व्याकरण (**शाकटायनव्याकरण**) की **अमोघवृत्ति** नामक टीका रची गई थी।[१] अमोघवर्ष प्रथम के सामन्तों में बङ्केय जैन धर्मावलम्बी था।[२] सौंदत्ती के सामन्त भी जैन थे।[३] कोन्नूर अभिलेख में अमोघवर्ष प्रथम को जैन धर्मावलम्बियों के लिए दान देता हुआ उल्लिखित किया गया है।[४] एलोरा की जैन गुफाओं के निर्माण में भी सम्भवतः अमोघवर्ष प्रथम का योगदान रहा।[५] जैन परम्परा में भी इस शासक को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। बनवासी के कुछ जैन विहार उसे कई धार्मिक नियमों के प्रतिस्थापक के रूप में मानते हैं।[६]

अन्य धर्मों के प्रति सद्भाव

जैन धर्म को संरक्षण देने के साथ अमोघवर्ष प्रथम ने स्वयं तथा उसके अन्य राजकीय पदाधिकारियों ने भी दूसरे धर्मों के प्रति पूर्ण सद्भाव रखा। अभिलेखों में प्राप्त देवता सम्बन्धी विश्वास, देवताओं की प्रशस्तियों एवं किए गए दानों आदि से यह ज्ञात होता है कि राज्य-शासन अपनी धार्मिक नीति में अत्यधिक उदार था। अमोघवर्ष प्रथम ने लोक उपद्रव को शान्त करने के लिए महालक्ष्मी की पूजा की थी जिसमें अपने शरीर का एक अंग ही अर्पित कर दिया था।[७] उसकी राजमुद्रा पर गरुड़-मुद्रा का स्पष्ट उल्लेख भी प्राप्त होता है।[८] अन्य

धार्मिक प्रतीकों में चक्र एवं स्वस्तिक का भी उल्लेख किया जा सकता है जिनका अंकन अमोघवर्ष प्रथम के काल के सोरटूर अभिलेख में प्राप्त है।[८] अभिलेखों के प्रारम्भ में प्राप्त देव-प्रशस्तियों तथा किए गये दानों के उल्लेखों से तत्युगीन धार्मिक सहिष्णुता पर विशेष प्रकाश पड़ता है। अमोघवर्ष प्रथम के कोन्नूर अभिलेख में जिनेन्द्र की प्रशस्ति के साथ ही विष्णु की भी प्रशस्ति की गई है।[९]

'वीरनारायण' के रूप में ऐसा जान पड़ता है कि अमोघवर्ष प्रथम विष्णु के अवतार के रूप में माना जाता था।[१०] इस सन्दर्भ में उसकी 'लक्ष्मीवल्लभ' तथा 'श्रीवल्लभ' उपाधियाँ भी उल्लेख्य हैं। अमोघवर्ष प्रथम एवं उसके सामन्त शासकों के कई अभिलेखों में विष्णु एवं शिव की साथ-साथ प्रशस्ति कही गई है।[११] अमोघवर्ष प्रथम के समय के नीलगुण्ड अभिलेख में विष्णु एवं शिव के साथ-साथ ब्रह्मा, इन्द्र एवं पार्वती का भी उल्लेख हुआ है।[१२] गुजरात शाखा के राष्ट्रकूट शासक दन्तिवर्मा के गुजरात अभिलेख में बुद्ध को नमस्कार (ओं नमो {बु}द्धाय) के साथ विष्णु एवं शिव की प्रशस्ति भी प्राप्त है।[१३] यह अभिलेख बौद्धों को दिए गये दान से सम्बन्धित है। एलोरा के दशावतार नामक शैव लयण के निर्माण में सम्भवतः अमोघवर्ष प्रथम ने रुचि ली थी।[१४] इस लयण में अंकित इस शासक के अभिलेख का प्रारम्भ 'ओम् नमः शिवाय' से किया गया है।[१५] अमोघवर्ष प्रथम के काल में मन्त्रवाडि एवं शिग्गौन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि सामन्त शासकों ने सूर्य एवं शिव मन्दिरों के लिए दान दिए थे।[१६]

अमोघवर्ष प्रथम ने इस प्रकार न केवल प्रजावत्सलता, सांस्कृतिक अभिरुचि एवं धार्मिक सहिष्णुता का एक मानदण्ड स्थापित किया बल्कि शासकों में एक जैन शासक के रूप में महान् योगदान दिया।

❖

पादटिप्पणी

१. द्रष्टव्य, 'अमोघवर्ष प्रथम के व्यक्तित्व का मूल्यांकन : योद्धा एवं कला और साहित्य का संरक्षक' पूर्वांश, **अध्याय १४, ८२ – ८३।**
२. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, पृष्ठ ३१, श्लोक ३५ – ३६।
३. **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग १०, पृष्ठ १६७ एवं आगे।
४. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, पृष्ठ ३१, श्लोक ३५ एवं आगे।
५. द्रष्टव्य, 'अमोघवर्ष प्रथम के व्यक्तित्व का मूल्यांकन : योद्धा एवं कला और साहित्य का संरक्षक' पूर्वांश, अध्याय १४, पृष्ठ ८४। एक जैन मन्दिर के लिए दिए गए दान का सन्दर्भ अमोघवर्ष प्रथम के काल के राणेबेन्नूर कन्नड़ शोध–संग्रहालय अभिलेख में भी प्राप्त है (**कर्नाटक इंस्क्रिप्शंस,** भाग १, पृष्ठ १४ – १६।
६. द्रष्टव्य, ए. एस. अल्तेकर, **दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स,** पृष्ठ ३१२।
७. सञ्जान अभिलेख, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १८, पृष्ठ २४८, श्लोक ४७ (उपर्युद्धृत)।
८. अमोघवर्ष प्रथम के सञ्जान अभिलेख, **वही,** श्लोक ५० (भग्ना समस्तभूपालमुद्रा गरुड़मुद्रया); कोन्नूर अभिलेख, **वही,** भाग ६, श्लोक १३ (..... गरुण लाञ्च {ञ्छ} नं ...)।
मुद्रा पर गरुड़ की प्रतिकृति के लिए द्रष्टव्य, अमोघवर्ष प्रथम का जवखेड अभिलेख (**एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ३२, पृष्ठ १२६, पाद टिप्पणी १, फलक संख्या ३); दन्तिवर्मा का गुजरात अभिलेख (**वही,** भाग ६, पृष्ठ २८५); अमोघवर्ष प्रथम के समय का हूविन–हिप्पर्गि अभिलेख (**साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शंस,** भाग ११, खण्ड १, पृष्ठ ५, पाद टिप्पणी १)। कक्कं सुवर्णवर्ष के बड़ोदा अभिलेख (**इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १२, पृष्ठ १५६) एवं ध्रुव द्वितीय के बगुमरा अभिलेख (**वही,** पृष्ठ १८६) की मुद्राओं पर शिव का अंकन कहा गया है, किन्तु ये अंकन गरुड़ के ही जान पड़ते हैं। इनमें से कक्कं सुवर्णवर्ष के अभिलेख की मुद्रा प्रकाशित है (**वही,** पृष्ठ १५६ के सामने का फलक) जिसमें गरुड़ के पंख स्पष्ट द्रष्टव्य हैं।
९. **साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शंस,** भाग ११, पृष्ठ ८, पाद टिप्पणी ३। **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, पृष्ठ ३६, श्लोक १–२।

श्रियः प्रियस्संगतविश्वरूपसुदर्शनच्छिन्नपरावलेपः {।}
दिश्यादनंतः प्रणताभरेन्द्रः श्रियं ममाद्यः प्रभां जिनेन्द्र ।।
अनंतभोगस्थितिरत्र पातुवः प्रतापशील प्रभवोदयाचलः।
सुरा(ष्)ट्रकूटोर्ज्जिवंशपूर्व्वजस्स वीरनारायण एव यो विभुः।।

१०. **वही,** श्लोक २।

११. अमोघवर्ष प्रथम के सञ्जान (**वही,** भाग १८, पृष्ठ २४३, श्लोक १), जवखेड (**वही,** भाग ३२, पृष्ठ १३०, पंक्ति १); तरसादी (**जर्नल ऑफ दि ओरियण्टल इंस्टीच्यूट, बड़ौदा,** भाग २०, संख्या २, पृष्ठ १५०, पंक्ति १) एवं सिरूर अभिलेख (**इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १२, पृष्ठ २१८, पंक्ति १); तथा उसके काल का नीलगुण्ड अभिलेख (**एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, पृष्ठ २८७, श्लोक १)।
स वोव्याद्वेधसा धाम यन्नाभिकमलं कृतं।
हरश्च यस्य कान्तेन्दुकलया कमलं कृतं।।

१२. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, पृष्ठ १०२, श्लोक १।
जयति भुवन कारणं स्वयंभूर्ज्जयति पुरेन्द्रनन्दनो मुरारिः {।}
जयतु गिरिसुता निरुद्धदेहो दुरितभयापहरो हरश्च देवः {।।}
विष्णु एवं शिव के सम्बन्ध में दूसरा श्लोक वही है जो पूर्व टिप्पणी में उद्धृत है।

१३. **वही,** पृष्ठ २८७, पंक्ति १।

१४. द्रष्टव्य, 'अमोघवर्ष प्रथम के व्यक्तित्व का मूल्यांकन : योद्धा एवं कला और साहित्य का संरक्षक' पूर्वांश, **अध्याय** १४, पृष्ठ **८४**।

१५. **आर्क्योलाजिकल सर्वे ऑफ वेस्टर्न इण्डिया,** भाग ५, पृष्ठ ८७, पंक्ति १।

१६. **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ५, पृष्ठ २०१ एवं आगे; **कर्णाटक इंस्क्रिप्शंस,** भाग १, पृष्ठ १३ एवं आगे।

❖

अध्याय १६

अमोघवर्ष प्रथम की मूर्ति

१६

अमोघवर्ष प्रथम की मूर्ति

बादामी के एक जैन गुहा के समीप जहाँ कोष्ट्राय राजा की मूर्ति है, बोधिसत्त्व जैसी एक अन्य मूर्ति को अमोघवर्ष प्रथम की मूर्ति के रूप में मानने का सुझाव डी. आर. भण्डारकर ने दिया था कि सम्भवतः जब अमोघवर्ष प्रथम ने राज-काज से अपने को मुक्त कर लिया था तब संन्यस्त होकर बादामी में तपश्चर्या की होगी और वहीं उसकी मूर्ति निर्मित की गई होगी।[1]

अमोघवर्ष प्रथम द्वारा राजकार्य से सन्यास का प्रश्न विवादित है।[2] अतः इस आधार पर सन्दर्भित मूर्ति को अमोघवर्ष प्रथम से सम्बद्ध करना समीचीन नहीं जान पड़ता। यह भी ध्यान देने की बात है कि सन्दर्भित मूर्ति बोधिसत्व जैसी कही गई है जब कि अमोघवर्ष प्रथम का बौद्ध होना किसी भी प्रकार मान्य नहीं हो सकता।

कोष्ट्राय राजा के नाम को कुष्ट एवं राय शब्द के मेल से बना हुआ माना गया है और यह प्रचलित है कि एक राजा जिसे कुष्ट रोग हो गया था यहाँ तपश्चर्या करके रोगमुक्त हुआ। उसी राजा की मूर्ति कोष्ट्राय राजा की मूर्ति कही जाती है। इस कथा के पीछे यह तथ्य जान पड़ता है कि मूर्ति के शिर भाग पर श्वेत चप्पड़ दिखायी देते हैं जिसके कारण कुष्ट रोग सम्बन्धी कथा चल पड़ी।[3]

इस बात की सम्भावना की जा सकती है कि कोष्ट्राय शब्द कोष्ट एवं राय के स्थान पर राष्ट्रकूट एवं राय शब्दों के मेल से बना हो जो मूर्ति के श्वेत चप्पड़ों के कारण कुष्ट से सम्बद्ध होकर कोष्ट शब्द में परिवर्तित हो गया हो। इस प्रकार कोष्ट्राय राजा की मूर्ति में किसी राष्ट्रकूट राजा को देखा जा सकता है। मूर्ति का अंकन राजपुरुष जैसा साभरण मण्डित है। यह राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष प्रथम से इस आधार पर सम्बन्धित किया जा सकता है कि अमोघवर्ष प्रथम के सामन्त बङ्केय ने सम्भवतः बादामी के किसी वल्लभ नामधारी विरोधी को परास्त किया था। अतः विजय प्राप्त किये हुए राजा की मूर्ति रची गई होगी। किन्तु इस सुझाव में सम्भावनाओं का आधार ही प्रमुख है।

❖

पादटिप्पणी

१. **प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ दि आर्क्यालाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, वेस्टर्न सर्किल,** १९०९–१९१०, पृष्ठ ४१ – ४२; **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १८, १९२५–२६, पृष्ठ २४२।

२. द्रष्टव्य, 'अमोघवर्ष प्रथम का शासन से सन्यास का प्रश्न' पूर्वांश, **अध्याय** १२, पृष्ठ ७९–८०।

३. **प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ दि आर्क्यालाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, वेस्टर्न सर्किल,** १९०९–१९१०, पृष्ठ ४।

४. द्रष्टव्य, 'अमोघवर्ष प्रथम के काल का अन्तिम उपद्रव तथा गुजरात शाखा के राष्ट्रकूटों के विद्रोह का प्रश्न' पूर्वांश, **अध्याय** ८, पृष्ठ **५२ - ५३।** अमोघवर्ष प्रथम को कर्क्क द्वितीय के कर्डा अभिलेख में चालुक्यों के लिए कालाग्नि जैसा कहा गया है। (**इण्डियन एण्टिक्वेरी**, भाग १२, पृष्ठ २६४, पंक्ति ३)।

तस्य श्रीमद्मोघवर्षनृपतिश्चालुक्यकालानलः।

❖

अमोघवर्ष प्रथम का वंशवृक्ष

कक्क प्रथम
(चालुक्य सामन्त के रूप में)

- इन्द्र प्रथम
  - दन्तिदुर्ग (१)
    ७५३ ई० में स्वतंत्र शासक
    (७५३ - ७५८ ई०)
- कृष्ण प्रथम (२)
  (७५८ - ७७३ ई०)
  - गोविन्द द्वितीय (३)
    (७७३ - ७८० ई०)
  - ध्रुव (४)
    (७८० - ७९२ ई०)
    - स्तम्भ
    - कक्क
    - गोविन्द तृतीय (५)
      (७९३ - ८१४ ई०)
      - अमोघवर्ष प्रथम (६)
        (८१४ - ८८० ई०)
        (पत्नी असगव्वा)
        - दुद्दय्य
        - कृष्ण द्वितीय (७)
          (८८०-९१४ ई०)
        - रेवतीनिम्मडि
          (प्रथम पुत्री)
        - चन्द्रोबलब्बा
          (द्वितीय पुत्री)
          (गङ्ग भूतुग से विवाहित)
        - शंखा
          (सम्भवतः तृतीय पुत्री)
          (पल्लव नन्दिवर्मन् तृतीय से विवाहित)
    - इन्द्र
      (गुजरात शाखा)

मानचित्र

SAURASHTRA
Khetaka
Prabhāsa
Ujjayinī
Vidiśā
Vatapadra
(Baroda)
Nāndīpurī
R. Mahi
R. Narmadā
Bhrigukachchha
(Broach)
Nāgasārikā
(Navsārī)
R. Tapti
Achalapura
(Ellichpur)
Mahānadī
Elāpura
Godāvarī
Chakrakūta
Pūnaka
(Poona)
Kalyānī
Lattalūr
Karhātaka
(Karhad)
R. Bhīma
Mānyakheta
Krishnā
R. Krishnā
VENGĪMANDALAM
Vengīpura
Vātāpipura
Sugandhavatī
Siddhapura
Vanavāsi
VANAVĀSI
NOLAMBAVĀDI
Bāņavādi
N. Pennar
(Anantapur)
GANGAVĀDI
Kāñchī
R. Palar
KONGUDESA
NILGIRI
HILLS
TONDAMANDALAM
R. Kāverī
Tanjore
Madura
Rameśvaram
KERALA
PĀNDYA
LANKĀ
अमोघवर्ष प्रथम का
राज्य विस्तार
Miles
0 70 140

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(लेखक नाम, अकारादि क्रम से तथा एक ही लेखक की कई रचनाओं में प्रकाशन वर्ष क्रम से प्रस्तुत)

अमोघवर्ष — **प्रश्नोत्तरमालिका,** बेलगौम के पास शाहपुर के एक जैन व्यक्ति के पास हस्तलिखित प्रति सन्दर्भित, द्रष्टव्य, जे. एफ. फ्लीट, **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १२, पृष्ठ २१७ - १८, एक श्लोक उद्धृत पृष्ठ २१८ (**नृपतुङ्ग** भी देखिए)।

अल्तेकर, ए. एस. — 'सूरत प्लेट्स ऑफ कर्क्कराज सुवणवर्ष ऑफ दि गुजरात', राष्ट्रकूट ब्राञ्च, डेटेड शक ईयर ७४३, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग २१, १९३१, पृष्ठ १३३ - १४७।

दि राष्ट्रकूटज एण्ड देयर टाइम्स, पूना, १९३४।

'दि राष्ट्रकूट एम्पायर', **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज,** दि हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुल, भाग ४, सं० आर.सी. मजुमदार एवं अन्य, बम्बई, १९५५, द्वितीय संस्करण, १९६४, पृष्ठ १ - १८, 'शर्व आर अमोघवर्ष', पृष्ठ ८ - ११।

'दि राष्ट्रकूटज', **दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि डकन,** सं० जी. - याजदानी, लन्दन, १९६०, अध्याय ५, पृष्ठ २४७ - ३१४।

इन्द्रजी, भगवानलाल — **दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ गुजरात, बाम्बे गजेटियर,** भाग १, खण्ड २, बम्बई, १८९६।

किटेल, एफ. 'थ्री कोंगू इंस्क्रिप्शन्स', **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग ६, १८७७, पृष्ठ ६६ - १०३।

कीलहार्न, एफ. 'थ्री इंस्क्रिप्शन्स फ्राम कण्हेरी, **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १३, १८८४, पृष्ठ १३३ - १३७।

'ऐहोल इंस्क्रिप्शन ऑफ पुलकेशिन् सेकेण्ड', शक संवत् ५५६, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, १६०० - ०१, पृष्ठ १ - १२।

'कोन्नूर (परमेश्वर टेम्पुल) स्पूरियस इंस्क्रिप्शन ऑफ अमोघवर्ष फर्स्ट' शक संवत् ७८२, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, १६०० - ०१, पृष्ठ ५ - ३८।

कृष्णमाचार्लु, सी. आर. (सं०) 'दि राष्ट्रकूटज', **साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शन्स,** भाग११, बाम्बे-कर्नाटक इंस्क्रिप्शन्स, भाग १, खण्ड १, मद्रास, १६४०, इण्ट्रोडक्शन, पृष्ठ ३ - ७।

कृष्णशास्त्री, एच. 'उदयेन्द्रियम इंस्क्रिप्शन्स', **साउथ इण्डियन इंस्क्रिप्शन्स,** भाग २, आर्क्योलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, न्यू इम्पीरियल सीरीज, भाग १०, मद्रास, १६१६, पृष्ठ ३८१ - ८७।

गांगुली, ओ. सी. **दि आर्ट ऑफ दि राष्ट्रकूटज,** कलकत्ता, १६५८।

गुणधर **कसायपाहुड,** जयधवला टीका सहित, मथुरा, सं. फूलचन्द एवं अन्य, मथुरा, १६४४।

कसायपाहुड, पत्रावली संस्करण, बम्बई।

गुणभद्र **उत्तरपुराण,** सं. पन्नालाल जैन, वाराणसी, १६६८।

जिनसेन **पार्श्वाभ्युदय,** टीका सहित, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, १६०६।

आदिपुराण, सं. पन्नालाल जैन, काशी, १६६३।

जैन, पन्नालाल — **गुणभद्र** तथा **जिनसेन** देखिए।

जैन, लक्ष्मीचन्द्र — **महावीर** देखिए।

त्रिपाठी, शम्भूनाथ — **शाकटायन** देखिए।

नीलकान्त शास्त्री, के. ए. — 'अमोघवर्ष एण्ड कक्र्क सुवणवर्ष ऑफ लाट', **प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस,** १०वाँ अधिवेशन, पृष्ठ २१० - २१४।

ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इण्डिया, तृतीय संस्करण, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, १६६६, 'अमोघवर्ष', पृष्ठ १६२।

नृपतुङ्ग — **कविराजमार्ग,** सं. के. बी. पाठक, बिब्लियोथिका कर्णाटिका, सं० ५, बंगलोर, १८६८, (**अमोघवर्ष** भी देखिए)।

पंचमुखी, आर. एस. — 'शिग्गौन इंस्क्रिप्शन्स', **कर्णाटक इंस्क्रिप्शन्स,** भाग १, कन्नड़ रिसर्च आफिस, धारवाड, १६४१, अभिलेख संख्या १३, १४, १५, पृष्ठ १३ - १७।

पाठक, के. बी. — 'नृपतुङ्ग'ज कविराजमार्ग', **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राम्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग २०, १८८७ - १६००, पृष्ठ २२ - ३६।

'नृपतुङ्ग एण्ड दि आथरशिप ऑफ दि कविराजमार्ग (ए रिप्लाई टु डॉ० फ्लीट), **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राम्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग २२, पृष्ठ ८१-१५५ (**नृपतुङ्ग** भी देखिए)।

पाण्डेय, दीनबन्धु — 'कोन्नूर अभिलेख में उल्लिखित वल्लभ', **प्रभा**, दयानन्द महाविद्यालय, वाराणसी, १९८० - ८३, पृष्ठ ५४ - ५६।

'अमोघवर्ष प्रथम', (लगभग ८१४-८० ई.), **भारती,** बुलेटिन ऑफ दि कालेज ऑफ इण्डोलाजी, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी, प्रो. आर. बी. पाण्डेय वाल्यूम, अंक १५, १९७१ - ८४, पृष्ठ ६७ - १२२।

'जैन शासक अमोघवर्ष प्रथम', **परिसंवाद-४,** जैन विद्या एवं प्राकृत, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, १९८६, पृष्ठ ७३ - ७८।

पुरी, बी. एन. — **दि हिस्ट्री ऑफ दि गुर्जर प्रतिहारज,** बम्बई, १९५७।

फ्लीट, जे. एफ. — 'ए सीरीज ऑफ संस्कृत एण्ड ओल्ड केनेरीज इंस्क्रिप्शन्स रिलेटिंग टु रट्ट चीफटेन्स ऑफ सौंदत्ती एण्ड बेलगौम, कापीड फ्राम दि ओरीजिनल्स एण्ड एडिटेड विद ट्रान्सलेशन, नोट्स एण्ड रिमार्क्स, **दि जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग १०, १९७१ - ७४, पृष्ठ १६७ - २९८।

'संस्कृत एण्ड ओल्ड केनेरीज इंस्क्रिप्शन्स', **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १२, १८८३, पृष्ठ १५६ - १६५ एवं २१५ - २२५।

'तोर्खेडे प्लेट्स ऑफ दि टाइम ऑफ गोविन्दराज ऑफ गुजरात', शक संवत् ७३५, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ३, १८९४ - ९५, पृष्ठ ५३ - ५८।

'नीलगुण्ड इंस्क्रिप्शन ऑफ दि टाइम ऑफ अमोघवर्ष फर्स्ट - ए. डी. ८६६', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, १६०० - ०१, पृष्ठ ६८ - १०८।

'सम रेकार्ड्स ऑफ दि राष्ट्रकूट किंग्स ऑफ माल्खेड', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, १६०० - ०१, पृष्ठ १६० - १६८।

'सम रेकार्ड्स ऑफ दि राष्ट्रकूट किंग्स ऑफ माल्खेड', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ७, १६०२ - ०३, पृष्ठ १६८ - २३१।

'नोट्स आन इण्डियन हिस्ट्री एण्ड जियोग्राफी', अमोघवर्ष फर्स्ट एज ए पैट्रन ऑफ लिटरेचर, **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग ३३, १६०४, पृष्ठ १६७ - २००।

'नोट्स आन इण्डियन हिस्ट्री एण्ड जियोग्राफी', कवीरश्वर'ज कविराजमार्ग, **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग ३३, १६०४, पृष्ठ २५८ - ८०।

'सम रेकार्ड्स ऑफ दि राष्ट्रकूट किंग्स ऑफ माल्खेड', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १३, १६१५ - ११६, पृष्ठ १७६ - १६४।

फूलचन्द — **गुणधर** तथा **वीरसेन** देखिए।

ब्युलर, जी. — 'इंस्क्रिप्शन्स फ्राम कावी', **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग ५, १८७६, पृष्ठ १४४ - ५२।

ब्युलर, जी. एवं हुल्श, ई. — 'राठोर ग्राण्ट्स नं. थर्ड - ए ग्राण्ट ऑफ ध्रुव थर्ड ऑफ भडोच', **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १२, १८८३, पृष्ठ १७६ - ६०।

बर्गेस, जे० — **रिपोर्ट आन दि एलुरा केव टेम्पुल्स एण्ड दि ब्राह्मनिकल एण्ड जैन केव्स इन वेस्टर्न इण्डिया, आर्क्योलाजिकल सर्वे ऑफ वेस्टर्न इण्डिया,** भाग ५, नई दिल्ली, १९७० पुनर्मुद्रित, दशावतार इंस्क्रिप्शन्स एट एलूरा, पृष्ठ ८७ - ८९।

ब्राउन, पी. — **इण्डियन आर्किटेक्चर** (बुद्धिस्ट एण्ड हिन्दू पीरियड्स), बम्बई, १९५६।

भट, डी. आर. — 'जवखेड प्लेट्स ऑफ अमोघवर्ष फर्स्ट, शक ७४२', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ३२, १९५७, पृष्ठ १२९ - १३४।

भट्टाकलङ्क — **कर्णाटकशब्दानुशासनम्,** सं० बी. एल. राइस, बिब्लियोथिका कर्नाटिका, संख्या २, बंगलोर, १८९०।

भण्डारकर, डी. आर. — 'दि नौसारी कापर प्लेट चार्टर ऑफ दि गुजरात राष्ट्रकूट प्रिंस कर्क्क फर्स्ट, डेटेड शक ७३८', **जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग २०, १८९७ - १९००, पृष्ठ १३१ - ४९।

'प्लेट्स ऑफ दान्तिवर्मन ऑफ गुजरात, शक संवत् ७८९', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ६, १९०० - ०१, पृष्ठ २८५ - ९४।

'टू ग्राण्ट्स ऑफ इन्द्रराज थर्ड (फ्राम बेगुमरा), शक संवत् ८३६', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ९, १९०७ - ०८, पृष्ठ १२४ - ४१।

'बादामी' **प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ दि आर्क्योलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, वेस्टर्न सर्किल,** फार दि ईयर एन्डिंग ३१ मार्च १९१०, पृष्ठ ४१ - ४२।

'सञ्जान प्लेट्स ऑफ अमोघवर्ष फर्स्ट, शक ७९३', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १८, १९२५ - २६, पृष्ठ २३५- ५७।

भण्डारकर, आर. जी. 'ट्रांस्क्रिप्ट्स एण्ड ट्रांस्लेशंस विद रिमार्क्स ऑफ राष्ट्रकूट एण्ड कल्चुरी कापर प्लेट ग्राण्ट्स', **जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग २३, १८९० - ९४, पृष्ठ २३६ - ८१; 'राष्ट्रकूट ग्राण्ट्स फ्राम नवसारी एण्ड देओली', पृष्ठ २३६ - २५३ एवं २५३ - २६६।

दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि डकन, बाम्बे गजेटियर, भाग १, खण्ड २, बम्बई, १८९६; द्वितीय संस्करण, **कलेक्टेड वर्क्स ऑफ आर. जी. भण्डारकर,** भाग ३, पृष्ठ १ - १९८, पूना, १९२७, तृतीय संस्करण, **अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि डकन,** कलकत्ता, १९५७, पुनर्मुद्रित।

महावीर **गणितसारसंग्रह,** सं० लक्ष्मीचन्द्र जैन, सोलापुर, १९६३।

मार्शल, जे. 'संस्कृतिक एपिग्राफी', **एनुअल रिपोर्ट ऑफ दि डाइरेक्टर जेनरल ऑफ आर्क्योलाजी इन इण्डिया,** १९१९ - २०, कलकत्ता, १९२२, पृष्ठ ३२ - ३६।

याजदानी, जी. (सं.) **दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि डकन,** लन्दन, १९६०।

राइस, बी. एल. **भट्टाकलङ्क** देखिए।

रानाडे, एम. जी. 'ए नोट आन दि ग्रोथ ऑफ मराठी लिटरेचर', **जर्नल ऑफ दि बाम्बे ब्राञ्च ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी,** भाग २०, १८९७ - १९००, पृष्ठ ७८ - १०५।

रामूर्ति, जी. वी. 'नाडगाम प्लेट्स ऑफ वज्रहस्त', शक संवत् ६७६, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ४, १८६६ - ६७, पृष्ठ १८३ - ६३।

वीरसेन **कसायपाहुड की जयधवलाटीका,** सं. फूलचन्द एवं अन्य, मथुरा, १६४४ (**गुणधर** देखिए)।

वेंकटरामनय्य, एन. 'राष्ट्रकूटज ऑफ मालखेड', **प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस,** ८वाँ अधिवेशन, पृष्ठ ८५ - ६०।

शाकटायन **शाकटायनव्याकरण,** अमोघवृत्ति सहित, सं. शम्भूनाथ त्रिपाठी, वाराणसी, १६७१।

शास्त्री, एच. जी. 'तरसादी प्लेट्स ऑफ अमोघवर्ष फर्स्ट', **जर्नल ऑफ दि ओरियन्टल इंस्टीच्यूट, बड़ोदा,** भाग २०, १६७० - ७१, पृष्ठ १५५ - १६२।

शाह, अम्बालाल प्रे. **जैन साहित्य का बृहद् इतिहास,** भाग ५, वाराणसी, १६६६।

सरकार, डी. सी. 'दि डकन', **दि एज ऑफ इम्पीरियल कनौज,** दि हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुल, भाग ४, सं० आर. सी. मजुमदार एवं अन्य, बम्बई, १६५५, द्वितीय संस्करण, १६६४, अध्याय ६, पृष्ठ १३३ - १५०।

डी. आर. भट सम्पादित जवखेड अभिलेख पर टिप्पणी, **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग ३२, १६५७, पृष्ठ १३०, पादटिप्पणी २।

हुल्त्श, ई. 'ए कापर-प्लेट ग्राण्ट ऑफ दि गुजरात राष्ट्रकूट किंग ध्रुव सेकण्ड, डेटेड शक ७५७', **इण्डियन एण्टिक्वेरी,** भाग १४, १८८५, पृष्ठ १६६ - २०३।

'राष्ट्रकूट ग्राण्ट ऑफ कृष्ण सेकण्ड (फ्राम कापडवञ्ज), डेटेड शक ८३२', **एपिग्राफिया इण्डिका,** भाग १, १८८८ - ९२, पृष्ठ ५२ - ५८।

'नञ्जनगुड इंस्क्रिप्शन', **एपिग्राफिया कर्नाटिका,** भाग १२, सप्लिमेण्ट, पृष्ठ १ - ५।

❖

शब्दानुक्रमणिका

अ

अकालवर्ष शुभतुङ्ग ५१
अङ्ग ६५, ६६, ८१
अतिशयधवल २४, ८६
अन्तःपुर २४
अल्तेकर, ए. एस. १६, २३, २५, २६, ३६ - ४१, ४७ - ४८, ५१, ५४, ५५, ६१, ६५ - ६६, ७३, ७७ - ७८, ८४, ९१, ९९
अभ्यूषक ४०
अमोघवर्ष प्रथम ७, १५ - १६, १९ - २०, २३ - २५, २६, ३३, ३९ - ४०, ४२, ४७, ५१ - ५३, ५५ - ५६, ५८, ६१, ६५, ६६, ७३, ७७, ८१ - ८६, ८९ - ९२, ९५ - ९७, ९९
- की मूर्ति ९५
- के विरुद २४
- के सन्यास का प्रश्न ७३
- जैन धर्म का अनुयायी ८२, ८६
- द्वारा मान्यखेट की स्थापना २४
- प्रजावत्सल ८२
- योद्धा ८१
- विवाह २३, ४०
- विष्णु अवतार ९०
अम्म प्रथम ३९ - ४१
अमोघवृत्ति ८, ८३ - ८५, ८६, १०६

आसगव्वा ४०, ४२, ६७
आदिपुराण ८३, ८५, ८६, १०१

इ

इन्द्र २४, २६, ५१, ६०, ६७
इन्द्रजी, भगवानलाल २६, ५१, ६६
इन्द्र तृतीय ३६
इन्द्र प्रथम ६७

उ

उड़ीसा ६५
उत्तरपुराण ८४, १००
उदयेन्द्रियम अभिलेख ४७

ए

एडेरु अभिलेख ३६ - ४१
एलिचपुर २५
एलोरा ८३, ८६ - ६०
ऐहोल अभिलेख ५२

क

कण्हेरी अभिलेख ६१, ७३, ७७
कपर्दी ६१
कक्कं ६७
कक्कं द्वितीय २४ - २५
कक्कं प्रथम ६७
कक्कं सुवर्णवर्ष २६, ३३, ३६ - ४०, ५१ - ५२, ६१
–अमोघवर्ष प्रथम का संरक्षक २६
कर्डा अभिलेख २४ - २५, ४०, ६६
कर्णाटक शब्दानुशासन ८४, १०४
कर्हाड अभिलेख २६, ४०
कविराजमार्ग ८२, ८४

कवीश्वर	८४
कसायपाहुड	२६, ७८, ८३, ८६, ८६, १००, १०६
कापडवंज अभिलेख	३३, ५१, ८५
कावी अभिलेख	५१
कावेरी	४७
किटेल, एफ.	१००
कीर्तिवर्मन् द्वितीय	१५
कीलहार्न, एफ.	५६, १००
कृतकृत्यमल्ल	२४
कृष्ण तृतीय	२६, ४०
कृष्ण द्वितीय	३३, ५१, ५५, ७३, ७७, ७८, ८५, ८६, ६७
कृष्ण प्रथम	१५, ६१, ६७
कृष्णमाचार्लु, सी. आर.	७८, १००
कृष्णशास्त्री	१००
केरल	१५
केशिराज	८२
कोन्नूर अभिलेख	७ - ८, ४७, ५२ - ५३, ५७, ८४, ८६ - ६१
कोष्ट्राय राजा	६५
कैम्बे	५१

ख

खानदेश	१५

ग

गङ्ग	१५, ३३, ३६, ४७, ६७
- गङ्ग-राष्ट्रकूट संघर्ष	४७
गङ्गवाडि	४७, ६६
गणितसारसंग्रह	८, ८३ - ८४
गरुड़	६१

गरुड़मुद्रा ८६
गांगुली, ओ. सी. ८५, १००
गुजरात १५, ५१ - ५२
गुजरात अभिलेख ५२, ६०, ६१
गुजरात शाखा के राष्ट्रकूट २६, ५१ - ५३, ५५, ७३, ६०
गुणधर ८३, ८६, १००, १०३
गुणभद्र ८३-८४, ८६, १०० - १०१
गुप्तनरेश ८३
गुर्जर १५, ५१, ५३, ५८, ८१
गुर्जर देश १५
गुर्जर नरेन्द्र २४, २६, ८३,८६
गुर्जर नरेश ५२
गुलबर्ग २४
गोविन्द (कक्र्क सुवर्णवर्ष का भाई) ५१, ५३, ५८
गोविन्द तृतीय १५ - १६, १६, २३, २६, ३३, ३६, ४२, ५१ - ५२, ६५, ८१, ६७
- का पुत्र शर्व (अमोघवर्ष प्रथम) १५
- की मृत्यु १६, २३
- दिग्विजय अभियान १५
गोविन्द द्वितीय ६७
गोविन्द पंचम ४०
गोस्वामी, ए. ८५

च

चक्र ६०
चन्द्रगुप्त द्वितीय ८३
चन्द्रोबलब्बा ४७, ६७
चालुक्य १५, ३६ - ४१, ५३, ५५, ८१, ६५

चालुक्य-राष्ट्रकूट संघर्ष ३६, ४०

ज

जयधवलाटीका २६, ७८, ८३, ८६, ८६, १००, १०६

जवखेड अभिलेख २४, ४०, ६१ - ६२

जिनसेन ८२ - ८३, ८५, ८६, १०० - १०१

जिनेन्द्र ६०

जीमूतवाहन ८२

जैन ८२ - ८३, ८६

जैन गुहा ८६, ६५

जैन, पन्नालाल ८४, ८५, १०० - १०१

जैन मन्दिर ६१

जैन, लक्ष्मीचन्द्र ८४, १००

जैनलयण ८३

जैन विहार ८६

ड

डिण्डी ४७

त

तडाग २४

तरसादी अभिलेख ५२, ६२

त्रिपाठी, शम्भूनाथ ८४ - ८५, १०१, १०६

त्रिभुवनवल्लभ २४

तोर्खेडे अभिलेख १६

द

दक्कन ६६

दधीचि ८२

दन्तिदुर्ग १५, ६७

दन्तिवर्मा ५२, ६० - ६१

दशावतारलयण ८३, ६०
दुद्दय्य ५५, ६७
दुर्लभ २४
देओली अभिलेख २६
देवपाल ६५
द्राविड शासक ६५
- अमोघवर्ष प्रथम ६५

ध

ध्रुव द्वितीय ५१ - ५३, ५७ - ५८
- का अज्ञातनामा भाई ५१, ५७ - ५८
ध्रुव प्रथम १५, ३३, ५१ - ५२, ६७

न

नंजनगुड अभिलेख ४८
नन्दिवर्मन तृतीय ४७, ६७
नर्मदा ८२
नरलोकचन्द्र २४
नागवर्मा द्वितीय ८२
नारायणपाल ६५ - ६६
नासिक २५
निडगुण्डि अभिलेख ७३
नित्यमल्लवल्लभ २४
निस्वपुरक २४ - २५
नीतिनिरन्तर २४
नीलकान्त शास्त्री, के. ए. ८४, १००
नीलगुण्ड अभिलेख ६०, ६२
नौसारी अभिलेख २६, ३३, ३६
नृपतुङ्ग २४, ६६, १०१

प

पंचमुखी, आर. एस. १०१

पल्लव १५, ४७, ६७
पाठक, के. बी. ८४ - ८५, १०१
पाण्ड्य १५, ६५
पाण्डुरङ्ग ४० - ४१
पाण्डेय, दीनबन्धु १०२
पातालमल्ल २६
- कक्क सुवर्णवर्ष का विरुद २६
पार्वती ६०
पाश्वभ्युदय ८५, १००
पाल ६५, ८१
पाल-राष्ट्रकूट संघर्ष ६५
पुरी, बी. एन. ५४, १०२
पुलकेशी द्वितीय ५२
पुल्लशक्ति ६१
पृथिवीपति द्वितीय ४७
पृथिवीवल्लभ ५२
- चालुक्य उपाधि ५२
पृथ्वीराम ७३
पैठान २५
प्रश्नोत्तरमालिका ७३, ६६
प्रासाद २४

फ

फूलचन्द २६, ८६, १००, १०३, १०६
फ्लीट, जे. एफ. ६६, १०२

ब

बङ्केय ४७, ५२ - ५३, ५६ - ५८, ८६, ६५
- की प्रतिज्ञाएँ ५६
बगुमरा अभिलेख ३६, ५२ - ५४, ५७ - ५८, ६१

बड़ोदा अभिलेख	३३, ५२, ६१
बम्बई	५१
बर्गेस, जे.	१०४
बलि	८२
बादामी	१५, ६५
बारह वर्षीय युद्ध	३६ - ४१
बुद्ध	६०
बोधिसत्व	६५
बौद्ध	६०
ब्युलर, जी.	५१, १०३
ब्रह्मा	६०
ब्राउन, पी.	१०४

भ

भट, डी. आर.	२४, ४०, ४२, १०४
भट्टाकलङ्क	८२, १०४ - १०५
भण्डारकर, आर. जी.	५४, ७७, १०५
भण्डारकर, डी. आर.	७३, ६५, १०४
भीम सालुक्कि	३६
भूतुग	४७, ६७
भोज प्रथम	५१, ५३, ८१

म

मगध	६५, ६६, ८२
मजुमदार, आर. सी.	१६, ६५ - ६६, ६६
मध्य प्रदेश	१५
मन्त्रवाडि अभिलेख	६०
मयूराखिण्डि	२५
महाराज षण्ड	२४
महालक्ष्मी	८२, ८६
महावीर	८, ८४, १००, १०५

महावीराचार्य	८३
मान्यखेट (मालखेड)	२४ - २५
- की स्थापना	२४
- राजधानी	२४
मार्शल, जे.	१०५
मालखेड	२४
मालव	६५, ६६
मालव देश	१५
मालवा	५३
मिहिर	५२ - ५३, ५७ - ५८

य

याजदानी, जी.	७८, ६६, १०५

र

रट्टमार्तण्ड	२४
रत्नमालिका	७३
राइस, बी. एल.	८४, १०५
राम	४२
राममूर्ति, जी. वी.	१०६
राणेबेन्नूर शोध संग्रहालय अभिलेख	६१
रानाडे, एम. जी.	१०५
राष्ट्रकूट	१५ - १६, ३३, ३६ - ४१, ४७, ५१ - ५२, ६५ - ६६, ८१ - ८२, ८३, ६५
राष्ट्रकूट-चालुक्य वैवाहिक सम्बन्ध	४१
रेवतीनिम्मडि	४७, ६७

ल

लक्ष्मीवल्लभ	६०
लाटूर	२५

व

वङ्ग	६५, ६६, ८१
वनवासी	४७, ५३
वल्लभ	४७, ५१ - ५३, ५७ - ५८, ८१, ९५
वल्लभेन्द्र	५६, ५७
वातापी	१५
विङ्गवल्ली	४०
विचित्रवीर्य	४२
विजयादित्य द्वितीय	१५, ३९ - ४१
विन्ध्यपाद	१५
विमल	७३
विष्णु	९०, ९२
विष्णुवर्धन पंचम	४१
वीरनारायण	२४, ९०
वीरसेन	७८, ८३, ८९, १०३, १०६
वेंकटरामय्य, एन.	१०६
वेङ्गि	४०, ४१, ६५, ६९
वेङ्गिराज	४०, ७३

श

शंकराचार्य	७३
शंखा	४७, ९७
शब्दानुशासन	८२
शर्व (अमोघवर्ष प्रथम का नाम)	१५
शर्व (अमोघवर्ष प्रथम)	२३ - २४
- का विवाह	२३
शर्व (श्रीभवन का शासक)	१५
शाकटायन	८२ - ८३, ८९, १०१, १०६
शाकटायनव्याकरण	८, ८३ - ८५, ८९
शास्त्री, एच. जी.	१०६

शाह, अम्बालाल प्रे. ८५, १०६
शाहपुर ६६
शिग्गौन अभिलेख ९०
शिबि ८२
शिव ९० - ९२
शिव मन्दिर ९०
शीलमहादेवी ४१
शीलाहार सामन्त ६१
शैव ९०
श्रीभवन नगर १५
श्रीमार श्रीवल्लभ ९०

ष

षण्ड २४

स

सञ्जान अभिलेख ८, १६, २३, २९, ३३, ७३, ७७, ८२ - ८३, ९१ - ९२
सरकार, डी. सी. २५, ४०, ४२ - ४३, ४८, १०६
साङ्गली अभिलेख ४०
सिरूर अभिलेख १९, ४०, ५३, ६५, ६६, ७७, ९२
सूरत अभिलेख २९, ३३, ३९
सूर्य मन्दिर ९०
सूलूबुञ्जन २५
सोरटूर अभिलेख ९०
सौन्दत्ती ८९
सौन्दत्ती अभिलेख ७३
स्तम्भ ९७
स्याद्वाद सम्प्रदाय ८२, ८४

स्वस्तिक ९०

ह

हुल्त्श, ई. १०३, १०६

हूविन हिप्पर्गि अभिलेख ९१

❖

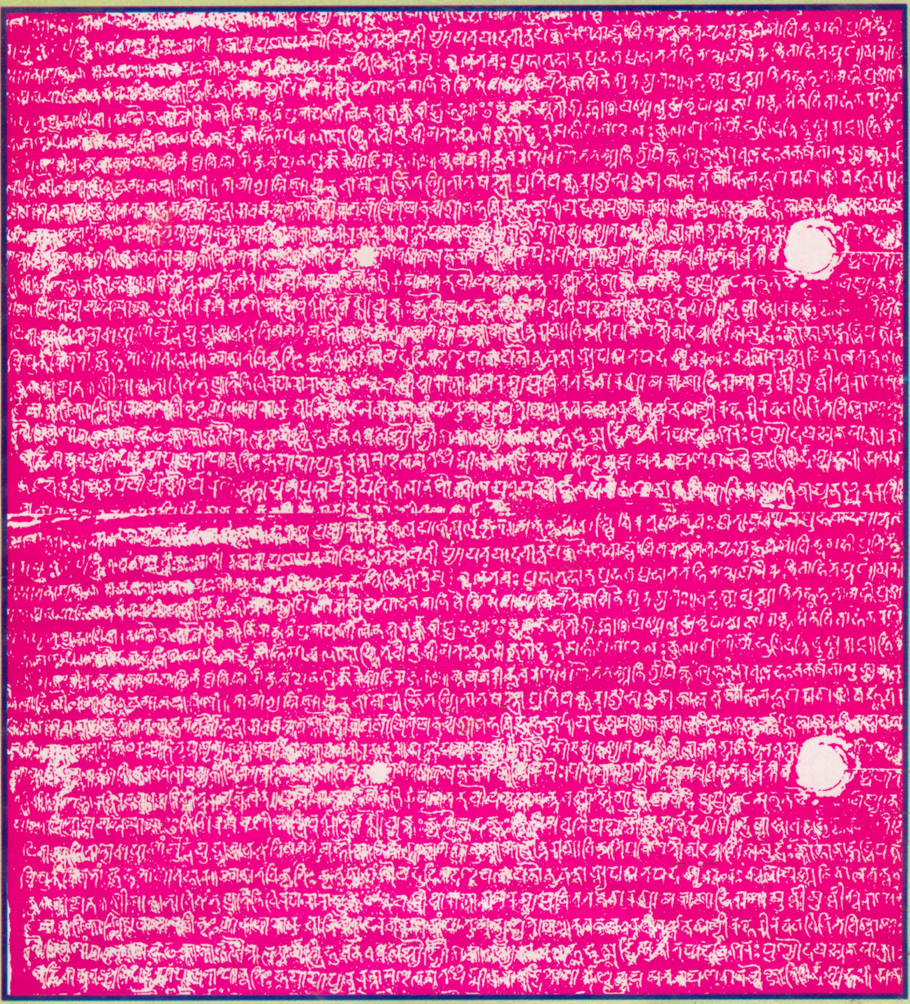

कला प्रकाशन

बी. 33/33 33/33 त कालोनी

बी

बी. एच. यू., वाराणसी-5